TITLE CODE : UPMUL00792

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

लोक पहल

शाहजहाँपुर, मंगलवार 28 फरवरी 2023 | शाहजहाँपुर से प्रकाशित | वर्ष :2, अंक :02 पृष्ठ :8+4 मूल्य 2 रुपये

एक नज़र

आठ वरिष्ठ पीसीएस अधिकारियों का तबादला

लखनऊ। प्रदेश सरकार ने आठ वरिष्ठ पीसीएस अधिकारियों के तबादले कर दिए हैं। आनंद कुमार शुक्ला को सीडीओ आजमगढ़ से अपर निदेशक सूडा लखनऊ बनाया गया है। श्री प्रकाश गुप्ता को सीडीओ गाजीपुर से सीडीओ आजमगढ़ बनाया गया है। संतोष कुमार वैश्य एडीएम वित्त एवं राजस्व बदायूं को सीडीओ गाजीपुर। राकेश कुमार पटेल मुख्य राजस्व अधिकारी प्रतापगढ़ को एडीएम वित्त एवं राजस्व बदायूं बनाया गया है। राकेश कुमार गुप्ता को सिटी मजिस्ट्रेट बरेली से मुख्य राजस्व अधिकारी प्रतापगढ़। रेनू सिंह एसडीएम प्रयागराज को सिटी मजिस्ट्रेट बरेली बनाया गया है।

विनय कुमार सिंह द्वितीय सिटी मिर्जापुर को एडीएम वित्त एवं राजस्व बनाया गया है मंगलू बलरामपुर को सिटी मजिस्ट्रेट मिर्जापुर बनाया गया है। विनय कुमार सिंह द्वितीय सिटी मजिस्ट्रेट मिर्जापुर को एडीएम वित्त एवं राजस्व हापुड़ बनाया गया है। मंगलेश दूबे एसडीएम बलरामपुर को सिटी मजिस्ट्रेट मिर्जापुर बनाया गया है।

सीएम योगी ने की समीक्षा बैठक, होली में विशेष सतर्कता बरतने के दिए निर्देश

गोरखपुर एजेंसी। दो दिवसीय गोरखपुर दौरे पर पहुंचे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंदिर में विकास कार्यों और कानून व्यवस्था को लेकर अधिकारियों को कई जरूरी दिशा निर्देश दिए। गीडा के सीईओ को निर्देश दिया कि औद्योगिक निवेश के लिए जमीन की खरीद तेज की जाए। औद्योगिक गलियारा के साथ धुरियापार में भी जमीन खरीदी जाए ताकि निवेशकों को किसी तरह की कोई समस्या न हो। उद्योग स्थापित करने के लिए जमीन की कमी नहीं सामने आनी चाहिए।

बैठक के दौरान गीडा सीईओ ने बताया कि शासन की तरफ से 200 करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है। जमीन की खरीद तेजी से की जा रही है। धुरियापार में भी प्रक्रिया तेजी से चल रही है। बजट की कमी नहीं आएगी। इसके पूर्व मुख्यमंत्री ने गुरु गोरक्षनाथ के दर्शन पूजन के बाद अपने गुरु ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ की समाधि स्थल पर माथा टेका।

बैठक के दौरान मुख्यमंत्री ने होली में विशेष सतर्कता बरतते हुए सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि त्योहार सौहार्दपूर्ण माहौल में मनाया जाए।

हम माफिया को मिट्टी में मिला देंगे : योगी आदित्यनाथ

■ प्रयागराज कांड पर विधानसभा में फूटा मुख्यमंत्री का गुस्सा

लोक पहल

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानसभा में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ व पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के बीच विधानसभा में तीखी बहस के दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ काफी गुस्से में नजर आए। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा "ये जो अपराधी और माफिया हैं आखिर ये पाले किसके द्वारा गए हैं? क्या ये सच नहीं है कि जिसके खिलाफ मुकदमा दर्ज है उन्हें सपा ने सांसद बनाया था? सपा के लोग अपराधी को पालेंगे और उसके बाद खुद ही तमाशा बनाते हैं। बहस के दौरान गुस्से में लाल दिखाई दिये योगी आदित्यनाथ ने कहा कि हम इस माफिया को मिट्टी में मिला देंगे"

बता दें कि बहुजन समाज पार्टी के विधायक राजू पाल की 2005 में हुई हत्या के मुख्य गवाह उमेश पाल की प्रयागराज स्थित उनके आवास पर गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इसके बाद विपक्ष योगी सरकार पर हमलावर है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रामचरितमानस विवाद पर समाजवादी पार्टी घेरते हुए कहा कि एक पवित्र ग्रन्थ को फाड़ा गया और जलाया गया, क्या यह सनातन धर्म का अपमान नहीं था ? मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि ये लोग (सपा) पेशेवर माफिया के संरक्षक हैं। यह हरकत करने वाला माफिया आज प्रदेश से फरार है, माफिया कोई भी हो, हमारी सरकार प्रदेश में 'माफिया राज' नहीं आने देगी। उन्होने कहा कि समाजवादी पार्टी के सहयोग से अतीक अहमद बार–बार एमपी और एमएलए बना है। 2009 में उस माफिया को सांसद बनाने का कुख्यात काम सपा ने ही किया था। सपा के लोग चोरी और सीनाजोरी का काम कर रहे हैं। माफिया कोई भी हो, सरकार की जीरो टॉलरेंस की नीति है। उन माफिया को मिट्टी में मिलाने का काम सरकार करेगी। चोरी और सीनाजोरी का काम नहीं चलेगा।

मुसलमानों की प्रगतिशीलता के जबरदस्त पैरोकार आरिफ मोहम्मद खान

सुयश सिन्हा

शाहजहांपुर। केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान शाहजहांपुर में मुमुक्षु महोत्सव के दौरान स्वामी शुकदेवानन्द विधि महाविद्यालय के दीक्षांत समारोह में बतौर मुख्य अतिथि पधार रहे हैं। जी हां, ये वही नाम है जिसे आपने ट्रिपल तलाक के मुद्दे पर बार बार सुना है और शाहबानो केस के सिलसिले में भी लेकिन, इसके अलावा भी महामहिम आरिफ मोहम्मद खान की अपनी एक अलग पहचान और शख्सियत है। 'मुझे नहीं लगता कि हिंदू एक धार्मिक शब्द है, बल्कि यह एक एक भौगोलिक शब्द है. उन्होंने कहा कि कोई भी जो भारत में पैदा हुआ है, कोई भी जो भारत में उत्पादित अन्न खाता है, कोई भी जो भारत की नदियों से पानी पीता है, वह खुद को हिंदू कहने का हकदार है।' यह वक्तव्य केवल आरिफ मोहम्मद खान जैसी शख्सियत ही दे सकती है।

उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर में 1951 में जन्मे और बाराबस्ती से ताल्लुक रखने वाले परिवार के आरिफ मोहम्मद खान एकाएक तब चर्चा में आये जब शाह बानो केस में राजीव गांधी सरकार में गृह राज्य मंत्री रहे आरिफ मोहम्मद खान ने शाह बानो के पक्ष में आए सुप्रीम कोर्ट के फैसले की जबरदस्त पैरवी की थी और 23 अगस्त 1985 को लोकसभा में दिया गया खान का भाषण यादगार हो गया था। इस केस में मुस्लिम समाज के दबाव में आकर राजीव गांधी ने मुस्लिम पर्सनल लॉ संबंधी एक कानून संसद में पास करवा दिया, जिसने शाह बानो के पक्ष में आए सुप्रीम कोर्ट के फैसले को भी पलट दिया और तब, खान ने राजीव गांधी के इस स्टैंड के खिलाफ मुखर होते हुए न केवल मंत्री पद से इस्तीफा दिया बल्कि कांग्रेस से भी दामन छुड़ा लिया।

उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर में 1951 में जन्मे आरिफ मोहम्मद खान का परिवार बाराबस्ती से ताल्लुक रखता था। बुलंदशहर जिले में 12 गांवों को मिलाकर बने इस इलाके में शुरुआती जीवन बिताने के बाद खान ने दिल्ली के जामिया मिलिया स्कूल से पढ़ाई की। उसके बाद अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय और लखनऊ के शिया कॉलेज से उच्च शिक्षा हासिल की। छात्र जीवन से ही खान राजनीति से जुड़ गए। भारतीय क्रांति दल नाम की स्थानीय पार्टी के टिकट पर पहली बार खान ने बुलंदशहर की सियाना सीट से विधानसभा चुनाव लड़ा था, लेकिन हार गए थे फिर 26 साल की उम्र में 1977 में खान पहली बार विधायक चुने गए थे। विधायक बनने के बाद खान ने कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ली और 1980 में कानपुर से और 1984 में बहराइच से लोकसभा चुनाव जीतकर सांसद बने।

1986 में राजीव गांधी और कांग्रेस से नाराज होकर खान ने पार्टी और अपना मंत्री पद छोड़ दिया। इसके बाद खान ने जनता दल का दामन थामा और 1989 में वो फिर सांसद चुने गए। जनता दल के शासनकाल में खान ने नागरिक उड्डयन मंत्री के रूप में काम किया, लेकिन बाद में उन्होंने जनता दल छोड़कर बहुजन समाज पार्टी का दामन थामा। बसपा के टिकट से 1998 में वो फिर चुनाव जीतकर संसद पहुंचे थे। फिर 2004 में, खान ने भारतीय जनता पार्टी का दामन थाम लिया और भाजपा के टिकट पर कैसरगंज सीट से चुनाव लड़ा लेकिन हार गए। फिर 2007 में उन्होंने भाजपा को भी छोड़ दिया क्योंकि पार्टी में उन्हें अपेक्षित तवज्जो नहीं दी जा रही थी। बाद में, 2014 में बनी भाजपा की केंद्र सरकार के साथ उन्होंने बातचीत कर तीन तलाक के खिलाफ कानून बनाए जाने की प्रक्रिया में अहम भूमिका निभाई।

खान हमेशा मुस्लिम समाज में सुधारों के समर्थक रहे और अपना स्टैंड वो राजीव गांधी के खिलाफ जाकर जाहिर कर ही चुके थे। तीन तलाक प्रथा को लेकर खान ने हमेशा खुला विरोध जाहिर किया था और कहा था कि इसे अपराध मानकर तीन साल जेल की सजा का प्रावधान होना चाहिए। इस्लामी सुधारों को लेकर वह कई नीति निर्धारण प्रक्रियाओं में शामिल रहे। आरिफ मोहम्मद खान लगातार इस्लाम और सूफीवाद से जुड़े विषयों पर कई तरह के लेख और कॉलम लिखते रहे हैं। अपने लेखन के जरिए भी खान भारत के मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड को खत्म किए जाने की पैरवी करते रहे हैं। शाह बानो केस में सुप्रीम कोर्ट के फैसले को सही ठहराते हुए उन्होंने हमेशा कहा कि तलाकशुदा मुस्लिम महिलाओं को पूरा हक मिलना चाहिए।

लखनऊ के शिया कॉलेज से लॉ की पढ़ाई पूरी करने के बाद पूरे तरीके से इमरजेंसी के दौरान खुद को राजनीति की आग में झोंक दिया था। इसी बीच इंदिरा गांधी के द्वारा देश में इमरजेंसी लागू कर दी गई और इस इमरजेंसी में लाखों युवाओं नेताओं को इमरजेंसी के नाम पर जेलों में बंद कर दिया गया था। इन्हीं नेताओं में से एक आरिफ मोहम्मद खान भी थे, जिनको 19 महीने इंदिरा गांधी सरकार ने इमरजेंसी के दौरान जेल में बंद रखा। 19 महीने जेल में बंद रहने के बाद जब आरिफ मोहम्मद खान वापस अपने घर लौटे तो इसी बीच उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव का समय आ चुका था और आरिफ मोहम्मद खान ने जनता पार्टी से टिकट मिलने के बाद राजनीतिक अखाड़े में कांग्रेस के खिलाफ ताल ठोक दी। सन 78 के विधानसभा चुनावों में आरिफ मोहम्मद खान मात्र 26 साल की उम्र में कांग्रेस के कद्दावर और एनडी तिवारी के मंत्रिमंडल में कैबिनेट मिनिस्टर मुमताज मोहम्मद खान को हराकर जीत हासिल की। आरिफ मोहम्मद खान को बेहद सुलझा हुआ राजनीतिज्ञ माना जाता है। आरिफ मोहम्मद खान एक ऐसे राजनीतिज्ञ हैं जिन्होंने भले ही अलग–अलग पार्टी के निशानों पर चुनाव जीता हो, लेकिन हमेशा आरिफ मोहम्मद खान नसों में सबसे पहले देश प्रेम का जज्बा दौड़ता हुआ नजर आता है।

आरिफ खान की धर्मपत्नी रेशमा आरिफ भी एक बार कानपुर शहर से जनता दल के निशान पर विधायक बनकर विधानसभा पहुंच चुकी हैं। वहीं, आरिफ मोहम्मद खान के छोटे बेटे कबीर आरिफ खान पेशे से कमर्शियल पायलट हैं। स्याना क्षेत्र के लोगों का मानना है कि यहां पैदा होने वाला दशहरी आम की मिठास इस कदर महक से भरी होती है कि खाने वाले का मन और तन दोनों महक उठते है और केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान की नसों में इसी मिठास भरी फल पट्टी की मिट्टी की महक दौड़ती है।

प्रखर संत व शिक्षाऋषि स्वामी चिन्मयानन्द

लोक पहल

शाहजहांपुर। आजादी से पूर्व स्वामी शुकदेवानन्द सरस्वती ने शिक्षा और आध्यात्म का जो बीज बोया था वह आज वट वृक्ष बन चुका है। मुमुक्षु शिक्षा संकुल आज केजी से लेकर पीजी तक की शिक्षा एक ही कैम्पस में उपलब्ध कराने के साथ ही कानून की भी शिक्षा दे रहा है। करीब आधा दर्जन कमरों के साथ शुरू हुआ स्वामी शुकदेवानन्द महाविद्यालय आज एक विशाल कैम्पस के रूप में स्थापित हुआ है। इस का श्रेय अगर किसी को जाता है तो वह हैं मुमुक्षु शिक्षा संकुल के अधिष्ठाता व पूर्व केन्द्रीय गृहराज्यमंत्री स्वामी चिन्मयानन्द। 03 मार्च 1947 को गोण्डा के गोगिया पचदेवरा गांव में एक जमींदार राजपूत परिवार में जन्मे कृष्णपाल सिंह उर्फ स्वामी चिन्मयानन्द ने वर्ष 1989 में मुमुक्षु शिक्षा संकुल के अधिष्ठाता का कार्यभार संभाला। उस समय यहां की शिक्षण संस्थाओं तमाम मुकदमें चल रहे थे और आपसी खींचतान के चलते शिक्षण संस्थाओं का शैक्षिक स्तर भी गुणवत्तापूर्ण नहीं था। स्वामी चिन्मयानन्द ने अपनी दूर दृष्टि, कुशल निर्देशन में शनै शनै शिक्षण संस्थाओं की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए कार्य करना शुरू किया है। उनके मार्गदर्शन व प्रेरणा से ही शाहजहांपुर जनपद के बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से पाश्चात्य वैज्ञानिक, तकनीकि ज्ञान, साहित्य कला की शिक्षा प्रदान करने हेतु 25 फरवरी 1989 को कांचीकाम कोटी पीठ के जगतगुरू शंकराचार्य जी द्वारा मुमुक्षु आश्रम परिसर में श्री शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ की आधारशिला रखी गई। इसके उपरांत जब शहर के गणमान्य लोगों व विधि विशेषज्ञों ने स्वामी जी के समक्ष शहर में एक विधि महाविद्यालय की आवश्यकता व महत्ता के बारे में बताया तो स्वामी जी ने मुमुक्षु शिक्षा संकुल में विधि महाविद्यालय स्थापित करने का संकल्प लिया। 25 फरवरी 2003 को उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल महामहिम विष्णुकांत शास्त्री द्वारा यहां विधि त्रिवर्षीय कक्षाओं के साथ इसका शुभारंभ किया गया। वर्ष 2007 में यहां विधि पंचवर्षीय कक्षाओं का प्रारंभ हुआ। वर्ष 2018 से यहां एलएलएम की कक्षाएं भी प्रारंभ हो गई है। इसके साथ ही स्वामी शुकदेवानन्द महाविद्यालय में तमाम विषयों में परास्नातक व प्रबंधन के कोर्स खोलकर स्वामी जी ने जनपद के युवाओं को एक बेहतर शैक्षिक सुविधाएं व वातावरण देने का काम किया है। शैक्षिक गतिविधियों के साथ–साथ मुमुक्षु शिक्षा संकुल में स्वामी चिन्मयानन्द के निर्देशन में समय–समय पर आध्यात्मिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता रहा है। मुमुक्षु आश्रम में आयोजित होने वाली रामकथा और रासलीला का रसास्वादन करने आसपास के जनपदों से श्रद्धालु पहुंचते है। वहीं समय–समय पर यहां पर संत सम्मेलन का आयोजन भी किया जाता है। वर्तमान में स्वामी चिन्मयानन्द के कुशल निर्देशन में मुमुक्षु शिक्षा संकुल में पांच शिक्षण संस्थाएं बच्चो से लेकर युवाओं तक को शिक्षा प्रदान कर रही है।

श्रीराम जन्म भूमि मुक्ति आन्दोलन के प्रेरणता के रूप में अपनी कीर्ति पताका फहराने वाले पूर्व सांसद व केन्द्रीय गृहराज्यमंत्री स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती एक प्रखर संत होने के साथ ही उन्होंने एक शिक्षा ऋषि के रूप में भी अपनी कीर्ति फैलाई है। अगर राजनीति की जीवन की बात की जाये तो स्वामी चिन्मयानन्द ने बदायूँ से भाजपा के टिकट पर लोकसभा का चुनाव लड़कर उस समय के दिग्गज नेता स्व0 शरद यादव को शिकस्त देकर एकाएक चर्चा में आये। इसके उपरान्त उन्होंने जौनपुर व मछली शहर से भी लोकसभा चुनाव में

विजयी हासिल कर अटल बिहारी बाजपेयी सरकार में केन्द्रीय गृहराज्यमंत्री के रूप में कार्य किया। अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने असम की बोर्डो समस्या का हल निकालने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। वर्तमान में स्वामी चिन्मयानन्द मुमुक्षु शिक्षा संकुल में संचालित हो रही समस्त शैक्षिक संस्थाओं की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए दिन रात कार्य कर रहे हैं।

दीक्षांत समारोह में केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान होंगे मुख्य अतिथि

मुमुक्षु महोत्सव में एक से तीन मार्च तक विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन, तीन मार्च को अखिल भारतीय कवि सम्मेलन

लोक पहल

शाहजहांपुर। एक मार्च को स्वामी शुकदेवानन्द विधि महाविद्यालय का दीक्षान्त समारोह आयोजित किया जायेगा। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में केरल के राज्यपाल महामहिम आरिफ मोहम्मद खान मौजूद रहेंगे। यह जानकारी एसएस लॉ कालेज के प्राचार्य जयशंकर ओझा, एसएसएमवी के सचिव अशोक अग्रवाल व डा. अनुराग अग्रवाल संयुक्त रूप से पत्रकारवार्ता में दी। बताया कि दीक्षांत समारोह में महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली के कुलपति प्रो0 केपी सिंह, मुख्य वक्ता, प्रो0 बलराज सिंह चौहान, स्टेट लीडर, सीआरआईएसपी (उप्र), पूर्व कुलपति, राम मनोहर लोहिया राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, लखनऊ, विशिष्ट अतिथि प्रो0 अमित सिंह, संकायाध्यक्ष–विधि, एमजेपी रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, डॉ0 राजीव कुमार, कुलसचिव, एमजेपी रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली सहित तमाम विधि विशेषज्ञ मौजूद रहेंगे।

समारोह में सत्र 2019–20, 2020–21 एवं 2021–22 के विधि पंचवर्षीय, त्रिवर्षीय तथा एलएलएम पाठ्यक्रम के उत्तीर्ण छात्रों को

उपाधि वितरण किया जायेगा। सभी पाठ्यक्रमों के टॉपर छात्रों और एनसीसी के मेधावी कैडेट को गोल्ड मेडल और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित भी किया जायेगा। इसके अतिरिक्त विधि महाविद्यालय के प्राचार्य डा0 जय शंकर ओझा द्वारा सम्पादिक पुस्तक 'Role of Police in criminal Justice System, डा अनुराग अग्रवाल द्वारा सम्पादित पुस्तक 'Vocal for Local' और डा आलोक कुमार सिंह द्वारा सम्पादित पुस्तक 'Future Science for Sustainable Development' का विमोचन भी किया जायेगा। एसएसएमवी के सचिव अशोक अग्रवाल ने बताया कि दो मार्च को सायं 6 बजे युवा महोत्सव आयोजित किया जायेगा जिसमें मुख्य रूप से श्री शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ के छात्रों द्वारा भारत के विभिन्न प्रदेशों की लोकगीतों, लोकनृत्यों तथा नाटक आदि से सुसज्जित भव्य सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया जायेगा। दिनाँक तीन मार्च को दोपहर विशाल संत सम्मेलन और रात्रि 8 बजे अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया जायेगा।

नुक्कड़ नाटक के जरिए दिया फाइलेरिया से बचाव का संदेश

लोक पहल

शाहजहाँपुर। "व्यायाम करो...व्यायाम करो, जागिंग और व्यायाम करो...रहना है सेहतमंद तो व्यायाम करो..." इस तरह के संदेश पं. राम प्रसाद बिस्मिल संयुक्त जिला चिकित्सालय और अजीजगंज मोहल्ले के लोगों ने देखा तो बरबस खिंचे चले आये द्य कलाकारों ने जब फाइलेरिया बीमारी की गंभीरता समझाई और बचाव का सन्देश दिया तो नाटक देख रहे लोगों ने कहा हम भी फाइलेरिया से बचाव की दवा खाएंगे और परिवारवालों को भी दवा खिलाएंगे।

जनपद में फाइलेरिया से बचाव के लिए सर्वजन दवा सेवन (एमडीए) अभियान चलाया जा रहा है। स्वास्थ्य कार्यकर्ता घर–घर जाकर लोगों को दवा खिला रहे हैं। ज्यादा से ज्यादा लोगों को दवा खाने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से स्वास्थ्य विभाग के तत्वाधान में सेंटर फॉर एडवोकेसी एंड रिसर्च (सीफार) के सहयोग से नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किए गए। अनुकृति नाट्य मंच के कलाकारों ने पहले अजीजगंज मोहल्ला और फिर जिला अस्पताल में नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किए। कलाकारों ने नाटक के जरिए फाइलेरिया की गंभीरता समझाई। इसके साथ ही एमडीए राउंड के दौरान दवा खाने की अपील की। समुदाय को फाइलेरिया के लक्षण बताने के साथ ही उससे बचाव के तरीकों और दवा सेवन का संदेश अनोखे अंदाज में दिया। नाटक प्रस्तुति के दौरान पीसीआई संस्था के कोऑर्डिनेटर शमीम और विभाग के अन्य लोग भी मौजूद रहे जिन्होंने लोगों को दवा सेवन का लाभ बताया। इस अवसर पर जिला मलेरिया अधिकारी डॉ. एस. पी.गंगवार ने बताया कि नुक्कड़ नाटक से ज्यादा से ज्यादा लोगों तक संदेश पहुंचेगा और इसका फाइलेरिया उन्मूलन अभियान के दौरान काफी फायदा मिलेगा।

राज्यपाल के कार्यक्रम को लेकर प्रशासन एलर्ट, डीएम ने किया कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण

लोक पहल

शाहजहाँपुर। जिलाधिकारी उमेश प्रताप सिंह की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान के एक मार्च को प्रस्तावित भ्रमण कार्यक्रम के संबंध में अधिकारियों के साथ बैठक ली। बैठक के दौरान उन्होंने कड़े निर्देश दिए कि सुरक्षा के दृष्टिगत सभी आवश्यक प्रबंध समय से पूर्ण कर लिए जाएं। उन्होंने कहा कि सुरक्षा के दृष्टिगत किसी भी प्रकार की लापरवाही ना की जाए। मुख्य चिकित्सा अधिकारी को निर्देश दिए कि चिकित्सा प्रोटोकॉल के अनुसार समस्त व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जाए। सुरक्षा एवं फायर सेफ्टी के अधिकारियों को भी स्थल का भ्रमण कर आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सेफ हाउस एवं रूट की व्यवस्था संबंधित अधिकारी समय से देख कर पूर्ण करना सुनिश्चित करें। इस दौरान नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा, एडीएम त्रिभुवन, सीएमओ आरके गौतम, नगर मजिस्ट्रेट आशीष कुमार सिंह उपस्थित रहे। इसके उपरांत जिलाधिकारी ने स्वामी सुकदेवानंद कालेज में स्थित कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण भी किया।

वर्तमान परिवेश में पत्रकारिता एक चुनौतीपूर्ण कार्य : एसडीएम

लोक पहल

शाहजहांपुर (तिलहर)। पत्रकारिता वर्तमान परिवेश में निश्चय ही चुनौतीपूर्ण कार्य है, जिसे ग्रामीण क्षेत्र के पत्रकार बखूबी से निभा कर समाज को तराशने और पारस्परिक सामंजस्य बिठाने का कार्य करते हैं। उक्त विचार उप जिलाधिकारी तिलहर राशि कृष्णा ने नगर पालिका परिषद के सामुदायिक सभागार में पत्रकारों को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा समाज में उपेक्षित और समस्या ग्रस्त नागरिकों के लिए पत्रकार प्रशासन और समाज के बीच मजबूत कड़ी बनकर उन्हें जोड़ने का काम करते हैं। मुख्य वक्ता अमरीश चन्द्र पाण्डेय ने कहा कि वर्तमान परिवेश में पत्रकारिता निश्चय ही एक चुनौतीपूर्ण कार्य बन चुकी है किन्तु पत्रकारों को समाज हित में सच्चाई उजागर करने पर अनेक स्थानों पर संघर्ष विरोध और उत्पीड़न का शिकार भी होना पड़ता है। कार्यक्रम के दौरान वरिष्ठ पत्रकार अरुण पाराशरी, बलराम शर्मा सहित कई पत्रकारों को अंगवस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

तिलहर में उपज की विचार गोष्ठी संपन्न

उपज की तहसील इकाई का गठन : तिलहर शाहजहांपुर उत्तर प्रदेश एसोसिएशन ऑफ जर्नलिस्ट्स के जिला अध्यक्ष अनिल मिश्रा ने बताया कि नवगठित तहसील तिलहर इकाई के लिए सुरेंद्र सिंघल तथा दयाशंकर शर्मा तहसील संरक्षक, इंद्रभान सिंह बीनू अध्यक्ष, कुलदेव मिश्रा महामंत्री, विवेक शर्मा अंशु को वरिष्ठ उपाध्यक्ष, अनुराग अग्रवाल, सुमित कुमार गुप्ता उपाध्यक्ष, आमुख सक्सेना, रामकृष्ण सिंह, नवनीत शर्मा, अजय प्रताप सिंह, अनुज सिंह मंत्री, सौरभ गुप्ता रवि, कोषाध्यक्ष प्रशांत शर्मा ऑडिटर दानिश कुरेशी व रोहित सिंह सह मंत्री बनाए गए हैं। तिलहर ब्लाक कमेटी के लिए धीरेंद्र सिंह यादव, जैतीपुर के लिए सूर्यकांत मिश्रा, कटरा खुदागंज के लिए दानिश अंसारी तथा निगोही के लिए नवनीत यादव को ब्लॉक अध्यक्ष मनोनीत किया गया है।

मुमुक्षु शिक्षा संकुल बीज से वट वृक्ष की यात्रा

डा प्रशांत अग्निहोत्री

श्रीमद्भागवत में कहा गया है कि 'स्वयं हि तीर्थानि पुनन्ति सन्तः।' अर्थात् संत स्वयं तीर्थों को पवित्र करते हैं। पौराणिक पुण्य नदी देवहूति के पवित्र जल से प्रक्षालित तीर्थभूमि को स्वामी शुकदेवानंद जी महाराज ने, तब अपने चरणों से पवित्र किया जब वे अपने पूज्य गुरूदेव स्वामी एकरसानन्द सरस्वती जी महाराज के साथ सर्वप्रथम 1931 में शाहजहॉपुर आकर तिकुनियाबाग में ठहरे थे। वर्तमान में इसी स्थान पर मुमुक्षु आश्रम का विशाल प्रांगण स्थित है। इसके बाद वे पुनः फर्रुखाबाद चले गए । सन् 1936 में एक बार पुनः शाहजहॉपुर पधारे और फिर वे यही आश्रम में रहने लगे। जिस समय वे यहॉ आये उस समय तिकुनियाबाग की जमीन हिन्दू–मुस्लिम साम्प्रदायिक झगड़े में पड़ी हुयी थी। यह महाराज श्री का प्रताप था कि वे इस झगड़े को शान्त करने में सफल रहे। दैवी सम्पद् मण्डल के महामण्डलेश्वर रहे ब्रह्मलीन स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज ने आध्यात्मिक के साथ शिक्षा के प्रसार के लिए विद्यालयों की स्थापना का संकल्प लिया। उन्होंने सबसे पहले दैवी संपद ब्रह्मचर्य संस्कृत विद्यालय की स्थापना का महती कार्य उस समय पर किया जब महात्मा गांधी के नेतृत्व में देश में भारत छोड़ो आन्दोलन चल रहा था। यह सुखद संयोग है या स्वामी शुकदेवानंद जी महाराज की दूरदृष्टि, जिसने उन्हें राजनीतिक आंदोलनों के बीच शैक्षिक आंदोलन के पुरोधा पुरुष के रूप में शाहजहॉपुर में स्थापित किया। वे अच्छे से जानते थे कि राजनीतिक स्वतंत्रता, शैक्षिक ज्ञान के बिना अधूरी है इसलिए उन्होंने शिक्षा और समाज सेवा के क्षेत्र में राष्ट्र निर्माण का संकल्प लिया। 08 अगस्त सन् 1942 को ही शुकदेवानन्द जी महाराज ने वैदिक शिक्षा प्रचार और प्रसार के लिये संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना की मुमुक्षु आश्रम में की। श्री दैवी सम्पद् ब्रह्मचर्य संस्कृत महाविद्यालय के नाम से सुप्रसिद्ध इस महाविद्यालय में आज आचार्य तक की शिक्षा दी जाती है।

भारत के तत्कालीन गृहमंत्री रहे गुलजारी लाल नंदा जो स्वामी जी से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने तत्कालीन उ.प्र. सरकार के मुख्यमंत्री पं. गोविन्दबल्लभ पंत से कहकर आश्रम के पास की जमीन शाहजहॉपुर के शैक्षिक पिछड़ेपन को दूर करने के लिए स्वामी जी को उपलब्ध करायी। महाविद्यालय की प्रगति से प्रभावित होकर स्थानीय जनता के आग्रह पर स्वामी जी ने सन् 1942–43 में श्री दैवी सम्पद् इण्टर कालेज की स्थापना की। मुमुक्षु शिक्षा संकुल के वर्तमान मुख्य अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती जी महाराज के आशीर्वाद से, आज माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश से सम्बद्ध, इस इंटर कॉलेज का एक सुसज्जित भव्य भवन है।

इसके बाद उच्च शिक्षा के क्षेत्र में महाविद्यालय की स्थानीय आवश्यकता को देखते हुए स्वामी शुकदेवानन्द जी ने बच्चों को उच्च शिक्षा उपलब्ध कराने की दृष्टि से 08 मार्च सन् 1964 को स्वामी शुकदेवानन्द महाविद्यालय की आधारशिला रखी। शिलान्यास के अवसर पर देश के तत्कालीन गृहमंत्री गुलजारी लाल नंदा ने भवन का शिलान्यास किया। आज वही बीज एक वटवृक्ष बनकर एस.एस. पीजी कालेज के रूप में विकसित हुआ है।

06 मार्च सन् 1965 को जब स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज का शरीर पूर्ण हुआ तो मुमुक्षु आश्रम के संचालन का गुरूतर दायित्व स्वामी जी के शिष्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी को मिला जो बाद में अपने गुरू भाई स्वामी सदानन्द जी को यह दायित्व देकर स्वयं हरिद्वार चले गये। स्वामी सदानन्द जी के संरक्षण में मुमुक्षु आश्रम और शैक्षणिक संस्थाओं ने बहुत प्रगति की। इसके साथ ही मुमुक्षु आश्रम से मासिक पत्रिका परमार्थ का प्रकाशन भी किया जाता रहा। इस तरह आश्रम का विस्तार होता गया। यद्यपि इस बीच अध्यापकों और प्रबन्धतंत्र के बीच उत्पन्न कलह से पीड़ित होकर स्वामी सदानन्द जी भी ऋषिकेश चले गये। जिससे शैक्षिक परिसर के विकास का क्रम अचानक ठहर सा गया। इसके बाद एक लम्बे समय तक आश्रम और शैक्षिक परिसरों की प्रगति प्रभावित रही। बीच में स्वामी सदानन्द जी के योग्य शिष्य स्वामी शाश्वतानन्द सरस्वती ने भी कार्यभार संभाला तो उन्हें भी विवादों का सामना करना पड़ा। इसी बीच उनका भी अवसान हो गया। सन् 1989 में मुमुक्षु आश्रम में वर्तमान मुख्य अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानन्द का आगमन हुआ। उन्होंने अपनी मेधा और कुशल नेतृत्व क्षमता से विवादों का समापन कर लिया। महाराज श्री के आगमन से मुमुक्षु शिक्षा संकुल को प्रगति के नवीन पंख मिल गये। जनपद में उस समय सीबीएससी से सम्बद्ध कोई भी विद्यालय नहीं था जिसके कारण यहॉ लोगों को स्तरीय शिक्षा का लाभ नहीं मिल पा रहा था, तभी कांची कामकोटि पीठ के शंकराचार्य जगतगुरू जयेन्द्र सरस्वती जी का आगमन हुआ। उनकी प्रेरणा से स्वामी चिन्मयानन्द ने 25 फरवरी 1989 को श्री शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ की स्थापना की। आज इस विद्यालय का शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान है।

25 फरवरी 2003 को जब मुमुक्षु शिक्षा संकुल के वार्षिक समारोह में उ.प्र. के तत्कालीन यशस्वी राज्यपाल माननीय विष्णुकान्त शास्त्री पधारे तो कुछ स्थानीय अधिवक्ताओं के विधि महाविद्यालय की स्थापना के अनुरोध को महामहिम ने तत्काल स्वीकृति प्रदान की और स्वामी चिन्मयानन्द जी महाराज की प्रेरणा और आशीषों से वर्ष 2003 में विधि त्रिवर्षीय व 2007 में विधि पंचवर्षीय का पाठ्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

इस प्रकार स्वामी शुकदेवानन्द विधि महाविद्यालय की स्थापना हुयी। आज महाविद्यालय का एक बहुत ही भव्य और सुसज्जित भवन है। वहीं स्वामी शुकदेवानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय के साथ मुमुक्षु शिक्षा संकुल की सभी पॉच शैक्षिक संस्थाओं के बहुमंजली भव्य परिसर है। जहॉ विश्व स्तरीय शैक्षिक सुविधायें उपलब्ध है। समय–समय पर संकुल में राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक संगोष्ठियों का आयोजन किया जाता है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए बहुविध पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन भी किया जाता रहा है। अनुसंधान और शिक्षा के क्षेत्र में महाविद्यालय के विभिनन विभागों द्वारा विभिन्न प्रोजेक्ट और शोध कार्य कराये जाते है। महाविद्यालय से मुमुक्षु जर्नल ऑफ ह्यूमिनिटीज नामक शोध पत्रिका निरंतर प्रकाशित हो रही है। वहीं दार्शनिक डॉ0 राधाकृष्णनन और श्रीमती इंदिरा गांधी के विचारों पर अध्ययन और अनुसंधान के लिये यूजीसी द्वारा शोधपीठों की स्थापना की गयी है। समय–समय पर स्वनामधन्य अतिथि मुमुक्षु शिक्षा संकुल में पधार कर अपना आशीर्वाद विद्यार्थियों को देते रहे हैं। उनमें प्रमुख रूप से राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद, सर्वपल्ली राधाकृष्णनन, लोक सभा अध्यक्ष जीवी मावलंकर, अनन्त शयनम आयंगर, बलराम जाखड़, गृहमंत्री गुलजारी लाल नंदा व लालकृष्ण आडवाणी, राज्यपाल महामहिम विश्वनाथदास, सूरजभान, आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री मुख्यमंत्री कल्याण सिंह, रामप्रकाश गुप्त व वर्तमान के यशस्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का आगमन महाविद्यालय में हो चुका है। भाजपा के तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष और गृहमंत्री राजनाथ सिंह, डा. मुरली मनोहर जोशी, पर्यावरण विद् सुन्दरलाल बहुगुणा, सुप्रसिद्ध इतिहासकार प्रो.ईश्वरी प्रसाद पद्मविभूषण प्रो. कीर्ति सिंह, पद्मश्री प्रो. लाल जी सिंह व एनसीईआरटी के पूर्व निदेशक प्रो. जे.एस. राजपूत आदि प्रमुख है।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि पूर्व केन्द्रीय गृहराज्यमंत्री और मुमुक्षु शिक्षा संकुल के मुख्य अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती के आशीषों की सघन छाया तले मुमुक्षु शिक्षा संकुल विकास के नित नवीन आयाम छू रहा है। आज मुमुक्षु शिक्षा संकुल में केजी से लेकर पीजी तक की शिक्षा एक ही परिसर में उपलब्ध है। वर्तमान में मुमुक्षु शिक्षा संकुल कुछ ऐसे परियोजनाओं पर कार्य कर रहा है जो आने वाले समय में शिक्षा व अन्य क्षेत्रों में काफी लाभदायी सिद्ध होंगे। स्वामी शुकदेवानंद जी महाराज ने शिक्षा का जो बीज बोया था आज वह स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती जी महाराज के संरक्षण में विशाल वटवृक्ष का रूप ले चुका है, जिसकी छाया तले ज्ञान प्राप्त करने बहुत से बटुक आते हैं।

मुमुक्षु महोत्सव में सभी अतिथियों का स्वागत व अभिनंदन

स्वामी धर्मानंद सरस्वती इंटर कॉलेज

मुमुक्षु आश्रम शाहजहांपुर

स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती
अध्यक्ष, प्रबंध समिति

अशोक अग्रवाल
प्रबंधक

डा. अमीर सिंह
प्रधानाचार्य

गौरवशाली रहा है शाहजहांपुर का साहित्यिक इतिहास

सुशील दीक्षित विचित्र

शाहजहांपुर की वीर प्रसवा भूमि साहित्यिक क्षेत्र के लिए भी हमेशा से उर्वरक नहीं है। नाहिल (पुवायां) के रीतिकालीन कवि चंदन राय का जिक्र आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य का इतिहास में भी किया है। यह तुलसी दास के समकालीन बताये जाते हैं। इसी क्षेत्र के दो नाम और मिलते हैं ललई और गुबेर। आधुनिक काल में कविता के क्षेत्र में अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां और रोशन सिंह के नाम विशेष उल्लेखनीय है। राजबहादुर विकल, दामोदर स्वरूप विद्रोही और अग्निवेश शुक्ल राष्ट्रीय कवि थे। यह त्रिमूर्ति वीर रस की प्रतिनिधि थी। इनके नाम से शहर में एक तिराहा भी है। पहले गद्य क्षेत्र की बात करें तो एकांकी और एब्सर्ड नाटकों के जनक भुवनेश्वर की यह जन्मभूमि रही है। हृदयेश जी बहुत ख्यातिलब्ध कथाकार रहे हैं, चंद्र मोहन दिनेश, श्याम किशोर सेठ, राजेंद्र मेहरोत्रा, राजी सेठ, शिव शंकर वर्मा, राम शंकर वर्मा और बुद्धि सागर वर्मा के नाम उल्लेखनीय है।

इनसे पहले रामाधीन मिश्र बहुत प्रसिद्ध कवि हुए हैं। यह पेशे से अध्यापक थे और पैना ग्राम निवासी थे। बृजेन्द्र गुप्त बृजेन्द्र अप्पने समय में बहुत चर्चित थे। ओमप्रकाश अडिग जनपद के सबसे अधिक छपने वाले कवि थे। 1960 से मृत्युपर्यन्त 2023 तक की रचनाएँ हिन्दुस्तान की विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही। डॉ गिरिजानंदन त्रिगुणायत आकुल ने महाकाव्य और खंड काव्य लिखे। राजेंद्र च्यवन, राघवेंद्र मिश्र और अचल वाजपेयी समकालीन कविता के कवि थे। गंगा प्रसाद रस्तोगी, राजकुमार राज, डॉ नसीम जैदी, ज्ञान स्वरूप चतुर्वेदी नगर के दिग्गज कवि थे। नित्यानंद मुद्गल, कृष्णाधार मिश्र प्रसिद्ध गीतकार हैं। महेश सक्सेना कवि नाटक लेखक व कुशल रंगकर्मी हैं। नवगीतकार अजय गुप्त और गीतकार कमल मानव प्रदेश सरकार से पुरस्कार प्रात कवि है। डॉ राजकुमार शर्मा को हिंदी संस्थान द्वारा विभिन पस्तकों के लिए कई बार सम्मानित किया। शिवकुमार शर्मा शिवांशु हास्य के लिए मशहूर थे और ओमप्रकाश मिश्र व रामदीन सजल गीतों के लिए। लोकगीतकार विजय ठाकुर की एक दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। उमेश चंद्र सिंह, दिनेश रस्तोगी प्रसिद्द व्यंग्यकार हैं। अरुण धीरज करूण रस के इकलौते कवि थे। अनिल दीक्षित ने व्यंग्य क्षेत्र में अलग पहचान बनायी।

ज्ञानेन्द्र मोहन ज्ञान की गीत और गजल क्षेत्र विशिष्ट पहचान है और सुशील दीक्षित विचित्र समकालीन कविता के क्षेत्र में विशिष्ट हस्ताक्षर हैं। रावेन्द्र रवि, नागेश पांडे संजय और देशबंधु शाहजहांपुरी प्रसिद्ध बाल साहित्यकार हैं। डॉ प्रशांत अग्निहोत्री ने नवगीत और गद्य व्यंग्य में खासी पहचान बनायी। इनके अलावा चंद्रशेखर दीक्षित, अरुण दीक्षित, सरोज मिश्र, बृजेश मिश्र, डॉ सुदर्शन वर्मा सलिलेश, दीपक कंदर्प, आनंद त्रिवेदी, कुलदीप दीपक, गोविंद कृष्ण वाजपेयी, इंदु अजनबी, राजीव सिंह भारत, चद्रमोहन पाठक, लालित्य पल्लव, शिशिर शुक्ला, विकास पारस, विकास सोनी, पीयूष शर्मा, विवेक राज, विवेक आस्तिक, ओम नारायन ओम जनपद के उल्लेखनीय कवि हैं।

कवित्रियों में स्व डॉ तार पाठक, श्रीमती ज्ञानेंद्र सुषमा विद्यागुप्ता, संतोषी शर्मा, मधु गुप्ता का काफी नाम रहा है। उर्मिला श्रीवास्तव दशकों से कवि सम्मेलनों की विशिष्ट कवि हैं। उन्हें कई बार सम्मानित किया जा चुका है। रश्मि सक्सेना, गुलिस्ता खां, सुमन पाठक ने भी इस क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ी है।

साहित्यिक दृष्टिकोण से बीसवीं सदी का एक पुवायां के नाम रहा। राजाश्रय पा कर साहित्य के वहां नए ने सोपान गढ़े गये। राजा फतेह सिंह वर्मा चंद्र के उपनाम से कविता लिखते थे। राजा अजय वर्मा स्वयं के सिद्धहस्त कवि थे। प्रेम की गुरिया नाम से वह एक पुस्तक माला निकालते थे जिनमें उनकी ही रचनाओं संकलन होता था। उनके काल में गंगाधर गंग बहुत प्रसिद्द कवि हुए हैं। बदरी विशाल वीर रस के राष्ट्रीय स्तर कवि थे। चरणजीत सिंह दारूवाला हास्य के प्रसिद्ध कवि हुए। वर्तमान में भी पुवायां में कवियों की लम्बी श्रृंखला है जिसमें विजय तन्हा, रामबाबू शुक्ल, संजय अकेला, अरविंद पंडित, प्रदीप वैरागी, अनूप मिश्र तेजस्वी, सुधीर बादल प्रमुख उल्लेखनीय नाम है। कवियत्रियों में अमिता शुक्ल और नीलम राजेश गुप्ता ने अपनी विशिष्ट पहचान बनायी।

गीतः कौन बँधना चाहता है

ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'

कौन बँधना चाहता है
बंधनों में स्वेच्छा से।
एक आदमखोर करता
है नमस्ते दर्शकों से,
सच यही है हंटरों का
है उसे बस भय सताता।
है समझता हर इशारा
देखकर रिंग-मास्टर को,
और सर्कस में उसे बस
मार का ही डर नचाता।

कौन घिरना चाहता है
दुर्दिनों में स्वेच्छा से।
वह परिंदा साल भर से
कैद पिंजरे में टँगा है,
और उसको मिल रहा है
वक्त पर स्वादिष्ट दाना।
उड़ सके आकाश में वह
सोचना भी व्यर्थ है अब,
बन चुकी है नियति उसकी
कैद में रह फड़फड़ाना।

कौन जीना चाहता है
उलझनों में स्वेच्छा से।
बढ़ चुकी अंतर्कलह में
टूटकर परिवार बिखरा
शत्रु सा व्यवहार करते
बंधु जो थे साथ खेले।
चाहते हैं दूर रहना
बाँटकर संपत्ति सारी
है पिता लाचार बैठा
दर्द को किस भांति झेले।

कौन रहना चाहता है
परिजनों में स्वेच्छा से।

रेखा शाह आरबी बलिया

फागुन की बौराहट

जिंदगी का रंग ढंग सच पूछिए.. तो फागुन का महीना ही बदलता है फागुन अर्थात मार्च का महीना सब को बौराने बौखलाने का मौका देता है, ऐसा कोई भी नहीं है इस धरती पर की वह इस महीने की तीक्ष्ण तीव्र दृष्टि से बच जाए! कोई प्यार से मारा जाता है, कोई सरकार से मारा जाता है, और कोई रंगों की बौछार से मारा जाता है और इससे बचने का उपाय करना बेमानी है और आखिर बचने का उपाय करना ही क्यों है? समझदारी की बात यही है कि हम धारा के साथ–साथ चलें ! जब पूरी प्रकृति धरती बौराई हुई है तो हमारे समझदार बनने और दिखाने का और आपके नहीं बौराने का कोई तुक नहीं बनता है और ना कोई तुकबंदी बनती है।

आप दुनिया की दशा और दिशा देख लीजिए कैसे धरती पूरी बौराई हुई है ..आप तुर्की को देख लीजिए, सीरिया को देख लीजिए, यूक्रेन को देख लीजिए, चाइना को देख लीजिए, अमेरिका को देख लीजिए... विदेश को छोड़िए देश में ही देख लीजिए.. जोशीमठ को देख लीजिए, कश्मीर को देख लीजिए और दिल्ली तो गर्म तवे पर बैठ कर अपना पराठा बहुत पहले से सिकवा रही है सब अपना–अपना हिसाब किताब बनाए हुए हैं। पेड़ पत्ते, धरती, आकाश, हवा, पानी, मौसम सब के सब के बौराने के दिन चल रहे हैं और इनके बौराने से प्राणी मात्र की डर वाली पीपड़ी बज रही है। वैसे भी यह पिपणी बजवाने में हम इंसानों का बहुत बड़ा हाथ है हम बुद्धि से श्रेष्ठ मनुष्य जो करे सो कम है और जो इस धरती पर भरे और भर रहे हैं वह कम है जीव जगत तो मुफ्त में बेचारा मारा गया है।

कुछ जीव जगत और प्राणियों के बौराने का आलम यह है कि उन्होंने पहले ही अपने आप को लुप्त कर कर इस जादुई गोले से पीछा

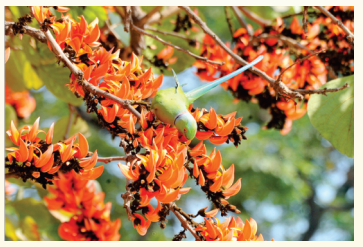

छुड़ा लिए हैं .. पीछे बचे आप हम और सारे प्राणी जगत मोर्चे पर डटे हुए हैं रोज नई ईजाद और रोज नई बीमारियों से लड़ने के लिए दवाओं के भरोसे तिकड़म लगाकर जिंदा रहने की कोशिश कर रहे हैं। और इतना आसान भी नहीं है इस जादुई गोले पर जिंदा रहना सबसे पहले तो ठीक–ठाक तरीके से सही जगह पैदा होने की जद्दोजहद उसके बाद पढ़ाई लिखाई गर्लफ्रेंड बॉयफ्रेंड वाला बवाल उसके बाद नौकरी चाकरी रोजगार की लंबी ठेलम ठेल वाली लड़ाई चलती है। तब कहीं जीने लायक एक सुविधा पूर्ण जिंदगी मिलती है।

अगर इन सभी से सही सलामत बच बचाकर निकल आए तो और भी है पारिवारिक टेंशन, बाढ़, भूकंप, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण सब मारने के लिए तलवार भांज रहे हैं एक अकेली बेचारी जिंदगी किस–किस का मुकाबला करेगी ..कहीं तो उसे शह के बजाय मात मिल जाएगी और जो इस कठिन अग्निपरीक्षा में से पास होकर बाहर निकल आए हैं उनके लिए तो सेलिब्रेशन बनता है और वही सेलिब्रेशन है फागुन की बौराहट ... जो इंसानों के अंदर थोड़ी बहुत जिंदगी की हवा भरने में लगी हुई है। वरना इंसानों की आत्मा तो कब की मर चुकी है।

बस उन मरी हुई आत्माओं के अंदर जीवन फूकने की कवायत है फागुन... वरना तो दुनिया में हजारों रंग है और सब बारी बारी से अपना रंग दिखाकर जिंदगी को रंग बिरंगा करने में प्रतिदिन लगे हुए हैं। और हमें जिंदगी में रंग–बिरंगे रंग लगाने वाले गैर नहीं सारे के सारे अपने ही हैं इसीलिए तो उनके रंग देखकर हम बौरा जाते हैं तो फागुन में बौराने के हजारों कारण है।

मीरा जैन, उज्जैन

पहला कदम

लघु कथा

प्रिया को देखते ही बजते ढोलक,उड़ता गुलाल एकदम थम से गये सभी की आंखों में आश्चर्य उतर आया उन्ही मे से एक मोहल्ला मुखिया किस्म की महिला ने लगभग डपटते हुए अपना मुंह खोला–'यह क्या प्रिया ! तुममे कुछ लाज– शर्म बाकी भी है या सब बेच खाई ?' 'ऐसा क्या कर दिया मैंने आंटी?' अब तो मुखिया महिला का पारा सातवें आसमान पर पहुंच गया और वे बरस पड़ी–'चोरी ऊपर से सीना जोरी, मुझसे सवाल करते तुझे शर्म नहीं आई इस गांव में जब से तू ब्याह कर आई है तब से मान–मनोव्वल के बाद भी तुम कभी होली नहीं खेलती थी और अभी आदमी को गुजरे बरस भी नहीं बीता है और रगं हाथ में लिए धमाल कर रही हो कुछ तो मर्यादाओं का ख्याल करो, तुम्हारे घर में कोई बोलने वाला नहीं है तो इसका यह मतलब तो नहीं कि जो जी में आये वो करो' प्रिया की तेवर भी कुछ तीखे हो गए –'आंटी ! आप बुजुर्ग और हम सब में बड़ी हैं इसका यह मतलब तो नहीं कि जो जी में आये वह बोलेंगी मेरी अपनी स्वतंत्र जिंदगी है आप लगाम लगाने वाली होती कौन है ?' कुछ महिलाओं ने आगे आकर मामला शांत किया फिर एक भद्र महिला ने उससे कारण जानने की गरज से विनम्रता पूर्वक पूछा–'प्रिया ! हम सभी यह जानना चाहते हैं कि पिछले 35–36 वर्षों में तुम्हें कभी होली खेलते नहीं देखा फिर आज अचानक क्यों?' प्रिया ने भी अपनी मंशा स्पष्ट की– 'बाद दरअसल यह है कि होली खेलने की इच्छा तो मेरी आज भी बिल्कुल नहीं थी किंतु मेरी एक–दो बहुत ही अजीज सहेलियां जिन्हें होली खेलने का बहुत ही ज्यादा शौक था और वे खेलती भी थी किंतु उनके वैधव्य ने उनसे इस सामाजिक नजरिए के कारण जीवन के ही नहीं बल्कि होली के रंग भी छीन लिये, बस ! आज मैं इस कुरीति को तोड़ने के लिए ही होली खेल रही हूं, नारी सुधार की दिशा में या मेरा पहला कदम है।

इंदु अजनबी

तन तो रंग ही जायेगा,
भीगेंगे सब अंग।
मन तक भी पहुंचें कहीं,
इस होली के रंग।।
प्रकृति झूमती नाचती,
नई कोपलों संग।
ऐसी ही मन की दशा,
कण कण भरी उमंग।।
सीने से लग जाइये,
शिकवे सारे भूल,
फिर जीवन रंग जाएगा,
होगा सब अनुकूल।।
गुझियों की खुशबू यही,
बांट रही संदेश।
प्रेम की सोंधी गंध से,
बंधा रहे यह देश।।

होली में....

ऐसे मिलना जनाब होली में।
रंग दूं पूरी किताब होली में।।

पन्ने पन्ने पे कुछ निशां देकर,
लिखूंगा मैं गुलाब होली में।।

सारे जुल्मों सितम हैं याद मुझे,
होगा सारा हिसाब होली में।।

पत्ती पत्ती भी नए ढंग में है,
खूब निखरा शबाब होली में।।

मेरे हांथों के कई प्रश्न अभी,
देना उनके जवाब होली में।।

आंखों में नीर भी, औ मय भी हो,
पिऊंगा बेहिसाब होली में।।

मोहब्बत

जिन्दगी की खुली किताब हूँ
किसके लिए बेताब हूँ

मैं यह सोचकर उदास हूँ
न कोई कर रहा अरदास हूँ

सोचूँ खता क्या हुई मुझसे
जो खफा हो गए मुझसे

मैं वफा ही तो करता हूँ
तुम जफा समझती हो

रात-दिन बेचौन हूँ मैं
चुरा के चौन बैठी हो

मैं मोहब्बत नाम दूँ कैसे
तेरी बदनामी से डरता हूँ

कहने को दिल की बात है
पर छुपा लिया जज्बात है

सूर्यदीप कुशवाहा, वाराणसी

मूर्धन्य संत, युगावतार, दार्शनिक महापुरूष स्वामी शुकदेवानन्द

डॉ. अनुराग अग्रवाल

भारत वर्ष प्राचीन काल से ही विश्व गुरू की उपाधि से विभूषित रहा है। इस देश में सन्तों की एक महान परम्परा रही है। उन्होंने न केवल विश्व को महान आध्यात्मिक संदेश दिया वरन् मानव को मानवीयता का संदेश भी दिया। स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज इसी महान सन्त परम्परा के वाहक थे। स्वामी जी केवल दार्शनिक विचारक ही नहीं थे वरन् उनके स्फुट विचार एवं कार्य उन्हें शिक्षा शास्त्री और समाज सुधारक के रूप में स्थापित करते है।

मूर्धन्य संत, युगावतार, दार्शनिक महापुरूष स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज का जन्म कन्नौज नगर के निकट मियागंज नामक ग्राम में हुआ था। धर्मपरायण माता शीतलादेवी एवं धन कुबेर जगन्नाथ साहू के संस्कार प्रारंभ से ही स्वामी जी पर पड़े। स्वामी शुकदेवानन्द जी का जन्म 1902 को हुआ था।

बच्चे में वैरागी भावना देखकर घर वालों ने सोचा कि कहीं यह साधु न हो जाए, ये साधु हो गया तब अपने घर की अपकीर्ति होगी। घरवालों ने विचार किया कि बहुत जल्द प्रयत्न करके इसका विवाह कर देना चाहिए, अन्ततः चौदह वर्ष की ही आयु में आपका विवाह मियागंज के निकट तिरवा के निवासी एक सम्पन्न वैश्य कुल में सम्पन्न हुआ। इसके बाद आपने जीविकोपार्जन के लिए दुकान खोली। दुकान खोलते समय आपने निश्चय कर लिया कि झूठ नहीं बोलूंगा, चाहे सौदा बिके या नहीं।

आपने अपने भाई रूप नारायण के साथ कन्नौज में कपड़े की दुकान खोली कुछ समय दुकान बंद कर दी गयी। आप कानपुर जाकर किराने का व्यवसाय करने लगे, थोड़े ही समय में व्यवसाय में पारंगत हो गये लेकिन पिता श्री जगन्नाथ प्रसाद साहू जी का स्वर्गवास हो गया, इससे आपको अत्याधिक दुःख पहुंचा और विचारमग्न रहने लगे।

इसी चिन्तन अवस्था में उन्हें लगा कि शायद उन्हें आध्यात्मिक शांति के शिखर की तलाश है। आपके मस्तिष्क में गुरू की प्राप्ति का विचार आया और यह विचार साकार हुआ। ब्रह्मलीन परिव्राजकाचार्य श्री 108 श्री स्वामी एकरसानन्द सरस्वती जी महाराज गुरू के रूप में मिल गए।

संसार के प्रति उदासीनता एवं सत्संग के प्रति राग में आपकी तीव्रता इतनी बढ़ गयी कि संसार के समस्त पदार्थ नीरस लगने लगे। संयोगवश कुछ समय उपरान्त यह स्थिति स्वयं ही उत्पन्न हो गयी, आपकी पत्नी के देहावसान के बाद आपने घर को त्याग दिया।

शमशान घाट–मेंहदी घाट के श्री हाथी राम बाबा का निवास स्थान था। समय के प्रवाह में यह स्थान टीला बन गया। गृह त्यागने के पश्चात सर्वप्रथम आपका आगमन यहीं पर हुआ और इस टीले को खत्म कर वैकुण्ठाश्रम की स्थापना की।

युगावतार परम् सद्गुरूदेव श्री स्वामी एकरसानन्द सरस्वती जी महाराज उन दिनों वैरी

आश्रम में निवास करते थे वे किसी शिष्य या सेवक को अपने पास नहीं रखते थे। आपने गुरूदेव से विनम्र निवेदन किया तब गुरू जी ने 13 नियमों की प्रतिज्ञा कराते हुए स्वीकृति दी। आपने तीन वर्ष तक गुरू जी द्वारा बताए गए तेरहों नियमों का पालन करते हुए गुय जी की अद्भुत सेवा की।

वैरी आश्रम में तीन वर्ष तक रहने के पश्चात आपने सत्संग प्रचार के लिए भ्रमण किया। भ्रमण काल में मैनपुरी, फरूर्खाबाद, शाहजहॉपुर, बरेली, दिल्ली, मुम्बई, आदि–आदि स्थानों पर पहुंचे। स्वामी जी शाहजहॉपुर में प्रथम बार ब्रह्मलीन, सदगुरू पूज्य श्री स्वामी एकरसानन्द सरस्वती जी महाराज के साथ सन् 1931 में पधारे। उस समय आप तिकुनिया बाग (मुमुक्ष–आश्रम) में ठहरें, यहां का दृश्य भयानक था। श्री विशनचन्द्र सेठ के पिता स्वर्गीय श्री काली चरन सेठ की श्रद्धा भावना और विशेष आग्रह पर इसी स्थान पर आश्रम का शिलान्यास किया।

सर्वप्रथम शाहजहॉपुर में आपको लाने का श्रेय डा0 सुदामा प्रसाद जी (स्वामी सद्गुणानंद जी महाराज) को है। सबसे पहले स्वामी जी ने शांति कुटी में निवास किया। स्वामी जी के पास सत्संग के लिए आने वाले लोगों से उस समय गर्रा पुल पर टैक्स लिया जाता है, जिससे स्वामी जी बहुत चिंतित थे। यह चिंता जानकर दिलावरगंज के सठ सरजू प्रसाद गुप्ता ने स्वामी जी की स्वीकृति से रोजा में अपने बाग में कुटी बनवाई, जिसका नामकरण एवं उद्घाटन स्वामी जी के द्वारा हुआ। लोगों की असुविधा (रोज आने–जाने की) को देखकर स्वामी जी ने सिविल लाइंस स्थित लाला श्रीराम खजांची के बाग में राउटिया लगा कर ही सत्संग व्यवस्था की, यहां पर आपकी स्वीकृति से लाला केदारनाथ जी टंडन ने एक कुटिया का निर्माण कराया जो कि आज सिविल लाइंस आश्रम के नाम से जानी जाती है।

इन्हीं विचारों की महिमा से सन् 1942 के सक्रांति काल में जब देश में सर्वत्र क्रांती की ज्वाला धधक रही थी तब आपने शाहजहॉपुर के भक्तों के विध्वंसक कार्यो से रोककर राष्ट्र के भावी कणधारों का निर्माण करने की प्रेरणा दी तथा "ब्रह्मचर्य संस्कृत महाविद्यालय" की स्थापना मुमुक्षु आरम में केवल तीन छात्रों से हुई। साथ ही मुमुक्षु आश्रम में 'श्री देवी सम्पद् इण्टर कालेज' बाल विद्या मन्दिर की स्थापना हुई। डिग्री कालेज की आवश्यकता को देखकर फरवरी 1964 में विशिष्ट नागरिकों की मीटिंग बुलाकर डिग्री कालेज खोलने की बात कही, जिसका सभी नागरिकों ने एक मत से समर्थन किया और शिवशंकर वर्मा (प्रिंसिपल, बी0एन0 एस0डी0 कालेज कानपुर) ने कालेज की समस्त रूप रेखा तैयार की।

पांच मार्च से नौ मार्च (1964) तक मुमुक्षु आश्रम में विशाल महोत्सव हुआ जिसमें सहस्रों की संख्या में लोग देश के कोने–कोने से आए और आठ मार्च 1964 को माननीय गृहमंत्री गुलजारी लाल नन्दा द्वारा 'स्वामी शुकदेवानन्द डिग्री कालेज' का शिलान्यास किया गया। कालेज निर्माण के लिए जनता में विशेष उत्साह था, निश्चित तिथि पर पैनल इंस्पेक्शन के तीन विद्वान आगरा यूनिवर्सिटी से पधारे और सुन्दर वातावरण में कालेज की उपयोगिता देखकर अपनी स्वीकृति देने के साथ–साथ यूनिवर्सिटी की भी स्वीकृति प्राप्त हो गई। 04 जुलाई को अध्यापकों की नियुक्ति एवं 15 जुलाई 1964 को विधिवत सत्र प्रारम्भ हुआ।

स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज के अद्भुत आकर्षण, अलौकिक प्रभाव, हृदयस्पर्शी उपदेश, प्रेम परिपूरित व्यवहार कुशलता, गंगा प्रभावत अकथनीय कर्मठता आदि ऐसे गुण हैं जिनकी समता अन्यत्र नहीं मिलती है। उनका समस्त जीवन त्याग, वैराग, परोपकार, निर्मल प्रेम और आध्यात्मिक जगत की आविस्मरणीय सेवाओं के लिए अथक परिश्रम आदि की गौरवमयी गाथा है। स्वामी शुकदेवानन्द जी कीर्ति पताका देश में ही नहीं विदेशों में भी फैला रही है। 18 जुलाई को प्रातः 8.15 बजे संत शिरोमणि स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज अपने सहस्त्रों शिष्यों को रोता विलखता छोड़कर पुण्यसलिला भगवती गंगा के पावन तटवर्ती सुरम्य परमार्थ निकेतन में ब्रह्ममलीन हो गये। ब्रह्ममलीन स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज द्वारा लोक कल्याण के लिए किये गये कार्य उनकी यशगंध से इस संसार को सुवासित करते रहेंगे।

मुमुक्षु महोत्सव में सभी अतिथियों का स्वागत व अभिनंदन

श्री दैवी सम्पद् ब्रह्मचर्य संस्कृत महाविद्यालय

(सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से सम्बद्ध)

मुमुक्षु आश्रम
शाहजहांपुर

स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती
अध्यक्ष, प्रबंध समिति

डा. श्रीप्रकाश डबराल
प्रबन्धक

डा. हरिनाथ झा
प्राचार्य

/ सम्पादकीय /

बदहाल पाकिस्तान

पाकिस्तान वर्तमान में भारी त्रासदी से जूझ रहा है। उसके पास एक ओर जहां मुद्रा खत्म होने की कगार पर है वहीं रोजमर्रा की चीजों के दाम आसमान छू रहे है। पाकिस्तान के लोगों का जीवन कष्टमय होता चला जा रहा है और इस सबके लिए दोषी सिर्फ वहां की सरकारों के साथ–साथ वहां के आवाम को भी ठहराया जा सकता है। इस समय पाकिस्तान में श्रीलंका जैसे हालात हो गए हैं। हालांकि पाकिस्तान के राजनीतिक हालात इससे बिल्कुल अलग हैं। यहां सरकार को अपदस्थ कर कभी भी सेना व्यवस्था को अपने हाथ में ले सकती है। जाहिर है, अगर बदहाल पाकिस्तान में सैन्य शासन फिर से लागू होता है तो भारत के लिए स्थितियां ज्यादा चुनौतीपूर्ण बन सकती हैं।

राजनीतिक अस्थिरता, आर्थिक बदहाली और आतंकी घटनाओं से बेहाल पाकिस्तान का संकट गहराता जा रहा है। प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ देश के संकट और चुनौतियों से जनता को आगाह तो कर रहे हैं, लेकिन समस्याओं से उबारने की कोई ठोस योजना प्रस्तुत करने में वे लगातार नाकाम रहे हैं। रोजमर्रा की चीजों की बेतहाशा बढ़ती कीमतों से आम जनता बेहाल है और सरकार के प्रति लोगों का गुस्सा बढ़ता जा रहा है। विदेशी मुद्रा लगभग खत्म होने की कगार पर है। कई कारखानों का सामान पाकिस्तान के बंदरगाहों पर पड़ा है, लेकिन उसे छुड़ाने के लिए व्यापारियों को बैंकों से डालर नहीं मिल पा रहे हैं। यह स्थिति पाकिस्तान की बदहाली बयान करती है। रूस–यूक्रेन युद्ध की मार पाकिस्तान पर भी पड़ी है, इसकी वजह से दुनिया में तेल की कीमतें बढ़ी हैं। पाकिस्तान पेट्रोलियम उत्पादों के लिए आयात पर निर्भर है। तेल की बढ़ती कीमतों के कारण खाने–पीने का सामान बेहद महंगा हो गया है। पाकिस्तान का सैन्य खर्च बहुत अधिक है। यहां बुनियादी ढांचे पर खर्च भी कर्ज में लिए धन से किया जाता है।

पाकिस्तान अभूतपूर्व संकट का सामना कर रहा है, ऐसे समय में सभी राजनीतिक पार्टियों को मिलजुलकर समस्याओं का समाधान करना चाहिए। मगर वहां राजनीतिक प्रतिरोध की भावना प्रबल है। आंतरिक अव्यवस्था से जूझते पाकिस्तान के पड़ोसी देशों से संबंध भी बद से बदतर हो चले हैं। भारत को लेकर उसकी विद्वेषपूर्ण नीति में कोई बदलाव नहीं आया है। यह भी दिलचस्प है कि आतंकी संगठनों को समर्थन को लेकर पाकिस्तान के राजनीतिक दलों जैसी ही स्थिति सेना में भी है। पाकिस्तानी सेना में आला अफसरों के कई गुट बने हुए हैं और उनमें आपसी हितों को लेकर जबर्दस्त टकराव है। आर्थिक संकट से जूझते पाकिस्तान में चीन का विरोध भी बढ़ता जा रहा है। चीनी इंजीनियरों और नागरिकों पर वहां हमले बढ़ने से पाकिस्तान का यह प्रमुख सहयोगी नाराज है।

आतंकवादी और खासकर दक्षिणी पश्चिमी बलूचिस्तान सूबे के उग्रवादी चीन को बार–बार इन परियोजनाओं से बाज आने और पाकिस्तान से चले जाने या फिर अंजाम भुगतने की धमकियां देते रहे हैं। पहले पाकिस्तान की फौज ने सीपीईसी की सुरक्षा की गारंटी ली थी, लेकिन अब न तो पाकिस्तान की फौज का रुख सकारात्मक है और न ही चीनियों को उनकी सुरक्षा पर भरोसा रहा है। इस समय पाकिस्तान में श्रीलंका जैसे हालात हो गए हैं। हालांकि पाकिस्तान के राजनीतिक हालात इससे बिल्कुल अलग हैं। यहां सरकार को अपदस्थ कर कभी भी सेना व्यवस्था को अपने हाथ में ले सकती है। जाहिर है, अगर बदहाल पाकिस्तान में सैन्य शासन फिर से लागू होता है तो भारत के लिए स्थितियां ज्यादा चुनौतीपूर्ण बन सकती हैं। इतिहास गवाह है कि पाकिस्तान में जब भी सैन्य शासन रहा है, भारत के साथ उसका तनाव चरम पर होता है। सीमा पर अकारण गोलाबारी, आतंकी घुसपैठ और कश्मीर में आतंकी हमलों की आशंका बढ़ जाती है।

'विवाह और संरक्षात्मक दृष्टिकोण'

डा. कनक रानी
पूर्व प्राचार्य
आर्य महिला कालेज

लिव इन रिलेशनशिप' संबंधों की समस्याएं, प्रेम–विवाह के प्रतिकूल परिणाम, मान्यताओं–परंपराओं के विपरीत विवाह संबंधों के दुष्परिणाम– विवाहोपरान्त छल– कपट आदि की घटनाएं आए दिन समाचार पत्रों की सुर्खियों में दिखाई देती हैं। यह विषम स्थिति कदाचित् वैयक्तिक–पारिवारिक समस्या का आकार ग्रहण कर रही है। सम्प्रति, वैवाहिक जीवन को सुखद एवं निरापद बनाने के लिए–इन विसंगतियों का निराकृत करने के लिए युवाओं और अभिभावकों द्वारा संदर्भित विमर्श की अपेक्षा है। यह निर्विवाद तथ्य है कि जब कभी मानव मन–मस्तिष्क समस्याओं से घिरा है अथवा दिग्भ्रमित हुआ है तो साहित्य उनके समाधानार्थ–मार्गदर्शनार्थ प्रस्तुत हुआ है।

संस्कृत वाङ्मय के अंतर्गत कालजयी रचनाकार कालिदास साहित्यिक माध्यम से जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठापना करते हुए– अमूल्य शिक्षा से मार्गदर्शित करते हुए दिखाई देते हैं। उन्होंने युवक– युवतियों के परस्पर प्रेम के स्वरूप को मर्यादित करने का प्रयास किया, भावनाओं के निरंकुश प्रवाह को रोकने का प्रयत्न किया। उनके मत में अविचारित कार्य में कभी ही अनुकूलता की परिणति होती है। कोई भी कार्य बिना सोच–विचार के नहीं किया जाना चाहिए। विवेक पूर्ण किए गए कार्य ही सुपरिणामदायी होते हैं। जीवनसाथी के वरण के विषय में भी यह तथ्य प्रभावी है। उनकी शिक्षा वर्तमान में भी युवाओं के हितार्थ प्रासंगिक अनुभूत होती है। पंचम अंक के अन्तर्गत ऋषि वचन है कि–अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात्तु संगतं रहः। अज्ञातहृदयेष्वेवं वैरी भवति सौहृदम।। (अभिज्ञान शाकुन्तलम)

कालिदास गुण– दोषों के परीक्षण के पश्चात् ही युवक– युवतियों को मेलजोल (विवाह) का परामर्श देते हैं। विवाह विषयक निर्णय से पूर्व आचार– विचार– स्वभाव आदि को परखना समीचीन है। यह आधार ही भविष्य में विवाह संबंध को सुखद संस्थिति प्रदान कर सकता है। उनके मतानुसार अंतर्दृष्टि से व्यक्ति के आचरण एवं व्यवहार का आकलन अपरिहार्य है। बिना जाने समझे ही मेलमिलाप (विवाह संबंध) का परिणाम अवांछित हो सकता है। अतः प्रेम की ओर बढ़ने से पूर्व गुणों– अवगुणों

को दृष्टिगत करना अपेक्षित है।

वे युवा वर्ग को सचेत करते हैं कि जीवन को निर्बाध बनाने के दृष्टिगत एकांत में इस तथ्य को विशेष रूप से संज्ञान में लेने की आवश्यकता है। जागरूक रहकर ही प्रेम की विश्वसनीयता को परखा जा सकता है और तनाव से–निराशा से बचा जा सकता है। जो जन इस तथ्य की उपेक्षा करते हैं उनके समक्ष प्रतिकूलता आ सकती है।

अज्ञात हृदय अर्थात् भाव– विचार– स्वभाव– व्यवहार आदि को जाने बिना प्रेम संबंध में प्रवृत्ति उचित नहीं। मातृ– पितृ आदि की अनुज्ञा व परामर्श आत्मकृत निर्णय में सम्यक् पथ प्रशस्त कर सकता है। यूं भी हमारी सनातन परम्परा में योग्यता एवं गुणों पर आधारित विवाह का निर्धारण उचित बताया गया है।

यहां सुप्रसिद्ध लोकोक्ति का उल्लेख करना उचित ही है कि– 'आदमी जाने बसे, सोना जाने कसे'। वस्तुतः व्यवहार से ही व्यक्ति की असलियत का पता लगता है। कुछ समय बीत जाने पर ही उसकी सोच– उसके स्तर की जानकारी होना संभव है। इसमें कोई संशय नहीं कि समयानुसार गुण और दोषों का स्वतः प्रकटीकरण हो जाता है। इसलिए जीवनपर्यंत निभाए जाने वाले इस संबंध के संदर्भ में शीघ्रता से निर्णय लिया जाना बुद्धिमत्ता नहीं। इसके अतिरिक्त मोबाइल द्वारा वार्ता को प्रेम विवाह का सुपुष्ट आधार समझना आगे चलकर दुरुख व तनाव का कारण बन सकता है। ऐसे गम्भीर प्रकरणों में मात्र वचनों पर ही विश्वास करना कितना सही है? विचारणीय है कि केवल भावनात्मक आधार पर इस महत्वपूर्ण विषय पर निर्णय लेना कहां तक औचित्यपूर्ण है? निश्चय ही, इस विषय में बौद्धिकता–तार्किकता को नजरअंदाज करना ठीक नहीं।

प्रेम प्रकृति प्रदत्त है किंतु उसमें समझदारी से संयुक्त होना भी सामयिक आवश्यकता है। इस संदर्भ को अत्यंत गंभीरतापूर्वक संज्ञान में लेना ही सुखकारी है। अन्ततः युवाओं द्वारा इस संदर्भ में विवेकपूर्वक आचरण करना–बौद्धिक धरातल पर निर्णय लेना अपेक्षित है। जीवनसाथी के चयन में पारिवारिक समर्थन को भी महत्व दिया जाना श्रेयस्कर है। ध्यातव्य है कि परिजनों का भी यह कर्तव्य है कि इस ओर सजग रहकर जीवन के अनुभवों/तथ्यों से अवगत कराते हुए संरक्षात्मक रुख अपनाएं।

'प्रकाश' पर प्रकाश डालने वाले महामानव: सर सीवी रमन

शिशिर शुक्ला

यूरोप की पहली यात्रा के दौरान उन्होंने भूमध्यसागर के जल के नीले रंग को देखा। समुद्र का नीला रंग ही वस्तुतः वह कारण था जिसने रमन को शोध के क्षेत्र में एक नई दिशा की ओर प्रेरित किया। स्वयं के द्वारा विकसित एक स्पेक्ट्रोग्राफ की सहायता से विश्लेषणोपरांत, नवंबर १९२१ में 'नेचर' जर्नल में 'द कलर आफ द सी' शीर्षक से उन्होंने एक शोध पत्र प्रकाशित किया, जिसमें उन्होंने बताया कि नीले रंग हेतु प्रकाश का प्रकीर्णन उत्तरदायी है।

सन 1930 वह सौभाग्यपूर्ण वर्ष था, जब प्रथम बार किसी भारतीय भौतिकविद ने विश्व के सर्वोच्च माने जाने वाले पुरस्कार 'नोबेल' पर अपना अधिकार सिद्ध किया था। वैश्विक पटल पर भौतिकी के क्षेत्र में भारत का डंका बजाने वाला यह महामानव और कोई नहीं बल्कि सर चंद्रशेखर वेंकटरमन थे। विज्ञान की किसी भी शाखा में नोबेल पुरस्कार पाने वाले वे प्रथम एशियाई व्यक्ति थे। 1901 से अब तक भौतिकी का नोबेल पुरस्कार केवल दो बार (वर्ष 1930 एवं 1983) भारतवर्ष के खाते में आया है। सर सी. वी. रमन ने भौतिकी के एक अति महत्वपूर्ण क्षेत्र 'प्रकाश' की प्रकृति को अपने प्रयोग के माध्यम से परिभाषित करते हुए नोबेल पुरस्कार को भारत के खाते में खींच लिया।

7 नवंबर 1988 को तिरुचिरापल्ली (ब्रिटिश शासन में मद्रास प्रेसिडेंसी एवं वर्तमान में तमिलनाडु में) में एक गरीब तमिल ब्राह्मण परिवार में जन्मे चंद्रशेखर वेंकटरमन को भौतिकी के प्रति अगाध रुचि विरासत में प्राप्त हुई थी। उनके पिता चंद्रशेखर रामनाथन अय्यर एक स्थानीय हाई स्कूल में भौतिकी एवं गणित के शिक्षक थे। मामूली आय अर्जित करने के कारण उनकी आर्थिक स्थिति तो बहुत अच्छी नहीं थी किंतु चंद्रशेखर वेंकटरमन की भौतिकी में गहरी रूचि एवं असाधारण मेधा व प्रतिभा उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा देने हेतु पर्याप्त थी। यह उनकी असाधारण मेधा का ही परिणाम था

28 फरवरी राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर विशेष

कि मात्र 11 वर्ष की आयु में उन्होंने हाईस्कूल एवं 13 वर्ष की आयु में इंटरमीडिएट स्तर की परीक्षाएं उत्तीर्ण कर लीं। 16 वर्ष की उम्र में प्रेसीडेंसी कॉलेज से स्नातक डिग्री की परीक्षा में उन्होंने सर्वोच्च स्थान हासिल किया, साथ ही साथ भौतिकी एवं अंग्रेजी विषयों में स्वर्ण पदक भी प्राप्त किया। स्नातक के दौरान ही 1906 में प्रकाश के विवर्तन का अध्ययन करते हुए उन्होंने अपने शोध को ब्रिटिश जर्नल 'फिलोसोफिकल मैगजीन' में प्रकाशित करने में सफलता प्राप्त की। इसी शोधपत्र के माध्यम से उनको परास्नातक की डिग्री भी प्राप्त हुई। 1917 में उन्हें कोलकाता विश्वविद्यालय में भौतिकी का पहला पालित प्रोफेसर नियुक्त किया गया। 19 वर्ष की आयु में रमन, भारतीय वित्त सेवा में चयनोपरांत कोलकाता में महालेखाकार पद पर कार्य करने लगे किंतु उनके मस्तिष्क में तो भौतिकी का कीड़ा लग चुका था। नतीजतन उन्होंने भौतिकी में शोध का प्रयास युद्ध स्तर पर जारी रखा। कुछ समय पश्चात 'इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टीवेशन ऑफ साइंस', जो भारत का प्रथम शोध संस्थान था, के द्वारा रमन को स्वतंत्र शोध की अनुमति प्रदान कर दी गई। 'इंडियन एसोसिएशन फॉर कल्टीवेशन आफ साइंस' का प्रथम लेख 'न्यूटन रिंग्स इन पोलराइज्ड लाइट' सर सी. वी. रमन के द्वारा ही लिखित था।

यूरोप की पहली यात्रा के दौरान उन्होंने भूमध्यसागर के जल के नीले रंग को देखा। समुद्र का नीला रंग ही वस्तुतः वह कारण था जिसने रमन को शोध के क्षेत्र में एक नई दिशा की ओर प्रेरित किया। स्वयं के द्वारा विकसित एक स्पेक्ट्रोग्राफ की सहायता से विभिन्न पदार्थों की आणविक संरचना का बहुत आसानी से पता लगाया जा सकता है। उनके शोध कार्य एवं उपलब्धियों से प्रभावित होकर अंग्रेज सरकार ने उन्हें 'सर' एवं रॉयल सोसाइटी ने उन्हें 'नाइटहुड' की उपाधि दी। 1954 में भारत सरकार ने अपने सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से सर सी. वी. रमन को विभूषित किया। 1926 में सर सी. वी. रमन ने 'इंडियन जर्नल ऑफ फिजिक्स' की स्थापना की एवं 1933 में वे भारतीय विज्ञान संस्थान के पहले भारतीय निदेशक बने। 1948 में उन्होंने 'रमन शोध संस्थान' की स्थापना की एवं अपने जीवन के अंत तक वहीं कार्यरत रहे। 21 नवंबर 1970 को उन्होंने इस संसार से विदा ले ली। भारत सरकार के डाकतार विभाग ने उनकी पुण्यतिथि पर एक डाक टिकट जारी किया था। निस्संदेह, सर सी. वी. रमन भौतिकी के लिए किसी दिव्यपुरुष से कम न थे। उनके द्वारा रमन प्रभाव के रूप में भौतिकी जगत को दिया गया शोधवरदान अनंत काल तक हम सब के लिए उपयोगी रहेगा।

क्वांटम प्रकृति का एक प्रमुख प्रमाण है। रमन प्रभाव की सहायता से

मुमुक्षु महोत्सव में सभी अतिथियों का स्वागत व अभिनंदन

SHRI SHANKAR MUMUKSHU VIDYAPEETH

(An English Medium Co-Education Sr. Secondary School)

(Affiliated to C.B.S.E. New Delhi)

Mumukshu Ashram, Shahjahanpur

(Phone : 05842-240107, Website : ssmv.net.in Email : ssmv8967spn@rediffmail.com)

(Founder-Swami Chinmayanand Saraswati Ji Maharaj)

Special Features of School

- Teaching all subject by the LCD Projector.
- Air conditioned Computer Lab, Well Equipped Physics, Chemistry Biology, Biotechnology laboratories and Standard Library.
- Spacious Ground for Games and Sports.
- Fast growing school with Impressive three storied building.
- standard size well ventilated Class rooms, modern comfortable furniture & generator facility.
- High Qualified, Trained and efficient teachers and Principal having served more than 10yrs of experience in education & administration.
- Neat surroundings and serene environment.
- Once again Brilliant top results in Secondary & Senior Secondary Examination.
- Ideal teacher-pupil ratio which is rarely found elsewhere.
- Bus facility to City, Tilhar and Jalalabad.

- Students are competiting in Joint Exams.
- For Skills Development Subjects Class IX-XII.
- Business Administration/Artificial Intelligence/Information Technology/Physical Activity Trainer/Yoga.
- Std.XI-XII Science & Commerce with Special Subjects e.g. Computer Science/Bio technology/Entrepreneurship

Swami Chinmayanand Saraswati
President/Founder

Dr. Sandhya
Principal

Ashok Agarwal
Secretary

परंपरागत शिक्षा की जगह वास्तविक शिक्षा की आवश्यकता : प्रो. महारूख मिर्जा

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ समापन

लोक पहल

शाहजहांपुर। स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय के वाणिज्य संकाय द्वारा आयोजित 'भारत में बौद्धिक संपदा अधिकार कानून और व्यवहार के उभरते हुए मुद्दे' पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन हो गया। प्राचार्य के डॉ आर के आजाद ने स्वागत भाषण पढ़ा। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो महारुख मिर्जा ने कहा कि इस संगोष्ठी में शामिल प्रतिभागी स्वयं मंथन करें कि हम यहां से सीख कर समाज के लिए ऐसा क्या लाएं जो समाज की उन्नति रोजगार और शिक्षा को आगे बढ़ा सके। उन्होंने कहा कि आज परंपरागत शिक्षा की जगह वास्तविक शिक्षा की आवश्यकता है। विशिष्ट अतिथि उच्च शिक्षा निदेशालय प्रयागराज के सहायक निदेशक प्रो. जय सिंह ने दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की सराहना करते हुए संगोष्ठी को शोधकर्ता, विद्यार्थियों और शिक्षक वर्ग के लिए अधिक लाभप्रद बताया। उप प्राचार्य व वाणिज्य विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डॉ अनुराग अग्रवाल के

कुशल संचालन में संपन्न हुए राष्ट्रीय संगोष्ठी में सभी के प्रति आभार डॉ देवेंद्र सिंह ने व्यक्त किया। संपूर्ण संगोष्ठी में अपना विशेष योगदान प्रदान करने वाले साक्षी, सुमित, अंशिका, शिवानी, जतिन, प्रज्वल वरुण को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर डॉ पुनीत मनीषी, डॉ धर्मवीर सिंह परमार, डॉ पदमजा मिश्रा, डॉ बरखा सक्सेना, डॉ गौरव सक्सेना, डॉ संतोष प्रताप सिंह, डॉ विजय तिवारी, डॉ सचिन खन्ना, डॉ अजय कुमार वर्मा, अपर्णा त्रिपाठी, प्रकाश वर्मा, प्रतीक्षा मिश्रा, डॉ रूपक श्रीवास्तव, यशपाल कश्यप, देव सिंह कुशवाहा, प्राची मिश्रा प्रसंशा सक्सेना, आँचल रस्तोगी, बादल सिंह, अरहम खान समेत कई संख्या में छात्र छात्राएं उपस्थित रहे। संगोष्ठी के अंतिम दिन में दो तकनीकी सत्र चले तृतीय तकनीकी सत्र में डॉ शकुंतला मिश्रा विश्वविद्यालय लखनऊ के वाणिज्य संकाय के प्रो नरेंद्र यादव अध्यक्ष रहे, मुख्य अतिथि डीएन कॉलेज मेरठ के वाणिज्य विभागाध्यक्ष प्रोफेसर एस.के शर्मा मुख्य वक्ता डॉ जी एस ओझा ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय के डॉ मनीष कुमार सीए नीलेश शुक्ला, व डॉ जगदीश कुमार रहे।

चौथे सत्र में बरेली विश्वविद्यालय के प्रबंध संकाय के डीन प्रो पी वी सिंह कार्यक्रम के अध्यक्ष रहे मुख्य अतिथि राजकीय महाविद्यालय जलालाबाद के प्राचार्य प्रो. राज कुमार सिंह, राजकीय महाविद्यालय जलालाबाद के प्रोफेसर एसके सिंह एमएम कॉलेज मोदीनगर के डॉ वेदप्रकाश, राजकीय महाविद्यालय डॉ आशीष दीक्षित, सन इंस्टिट्यूट के विकास अग्रवाल आदि लोग रहे। तृतीय तकनीकी सत्र से छात्र वर्ग से सत्यम शुक्ला एम ए अर्थशास्त्र को बेस्ट पेपर का अवार्ड मिला जबकि चतुर्थ तकनीकी सत्र से छात्र वर्ग से समृद्धि सक्सेना और शिक्षक वर्ग से बृज लाली को बेस्ट रिसर्च पेपर का अवार्ड दिया गया।

आल्हा गायन की वीरांगना हैं शीलू

लोक पहल

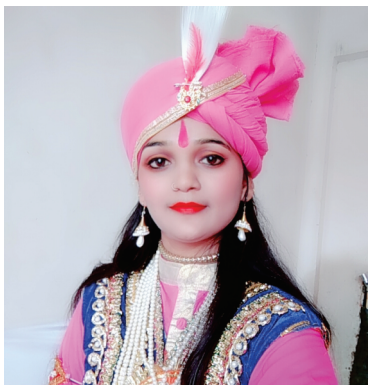

शाहजहांपुर। जिस पर एकाधिकार पुरुषों का था। उस आल्हा गायन की वीर रस की वीरांगना बन गई हैं शीलू। आल्हा सम्राट लल्लू वाजपेयी ने उन्हें पहले तो सिखाने से मना कर दिया। मगर, शीलू की जिजीविषा और संकल्प देख उन्होंने उसे आल्हा में पारंगत किया। शीलू देखते ही देखते आल्हा के मंचों पर छा गईं। आज के दिन इस विधा के गायकों में उसका बड़ा नाम है। उनके कई एलबम रिलीज हो चुके हैं। बहुत से अवार्ड वह जीत चुकी हैं। शीलू मुमुक्षु आश्रम में आयोजित होने वाले मुमुक्षु महोत्सव में अपनी कला का प्रदर्शन करेंगी।

खीरों के लकुशाहार निवासी शीलू सिंह राजपूत किसान परिवार से ताल्लुक रखती हैं। वर्ष 2010 में जब वह कस्बा खीरों के श्री सरस्वती इंटर कॉलेज में इंटर की छात्रा थीं, तब उन्होंने संजो बघेल की धुन पर आल्हा गायन शुरू किया। इसकी प्रेरणा उन्हें विद्यालय के शिक्षकों से मिली। वह राष्ट्रीय पर्वों पर विद्यालय के कार्यक्रमों में भाग लेती थीं। इसी बीच सेमरी के बरभनहार गांव के हनुमान मंदिर में उन्होंने आल्हा सम्राट लल्लू वाजपेयी का आल्हा गायन सुना। जिससे प्रभावित होकर उनके मन में आल्हा गायन के क्षेत्र में जाने की लालसा पैदा हुई। वह अपने पिता भगवानदीन राजपूत के साथ लल्लू वाजपेयी से मिलीं। आग्रह किया कि वह शीलू को अपनी शिष्या स्वीकार कर लें। मगर, उन्होंने यह कहकर मना कर दिया कि आल्हा गायन लड़कियों के बस की बात नहीं हैं। लेकिन, जब शीलू ने संजो बघेल की धुन पर आल्हा गाकर सुनाया तो वह प्रभावित हो गए। उन्होंने उसे आल्हा गायन सिखाना स्वीकार कर लिया।

शीलू ने वर्ष 2011 से मंच पर आल्हा गायन शुरू कर दिया। उनकी निष्ठा व लगन से कुछ ही दिनों में प्रदेश ही नहीं देश के अन्य प्रांतों में ख्याति मिलने लगी।

नई दिल्ली में एक टेलीकॉम कंपनी द्वारा 15 फरवरी 2014 को प्रसिद्ध अभिनेत्री काजोल के हाथों वूमेंस ऑफ द वर्ल्ड अवार्ड से सम्मानित कराया गया। प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने शीलू के गायन से प्रभावित होकर 8 मार्च 2016 को एक लाख की नकद राशि व प्रतीक चिह्न देकर लक्ष्मीबाई वीरता पुरस्कार से सम्मानित किया। 24 जनवरी 2018 को जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) द्वारा उनको यूपी रेश अवार्ड देकर सम्मानित किया जा चुका है। साथ ही उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी शीलू को उनकी कला के लिए सम्मानित किया। शीलू के एलबम माड़वगढ़ की लड़ाई, सिरसागढ़ की लड़ाई, इंदल हरण बलक बुखारा की लड़ाई, आल्हा का ब्याह यानी नयनागढ़ की लड़ाई, मंगल पांडे का इतिहास, चंद्रशेखर आजाद का इतिहास, झांसी की रानी की कहानी काफी प्रचलित है।

मुमुक्षु महोत्सव में सभी अतिथियों का स्वागत व अभिनंदन

NAAC B+

स्वामी शुकदेवानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय

मुमुक्षु आश्रम, शाहजहाँपुर–242226

सम्बद्ध–एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

अध्ययन केन्द्र–इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

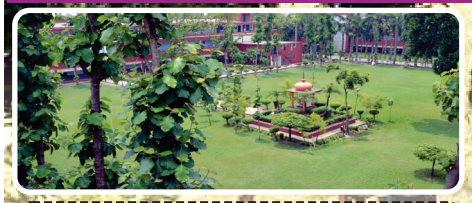

अनुदानित पाठ्यक्रम

बी.ए.
(अंग्रेजी हिन्दी, अर्थशास्त्र
राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, संस्कृत)

बी–एस.सी.
(भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित)

बी.काम., बी.एड.

एन.सी.सी., एन.एस.एस., रोवर्स–रेंजर्स

स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रम

बी.ए.
(गृहविज्ञान, ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग, संगीत (गायन), इतिहास, शिक्षाशास्त्र, भूगोल, सैन्य विज्ञान, मनोविज्ञान एवं दर्शनशास्त्र)
बी–एस.सी. (जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान)
बी.बी.ए., बी.सी.ए.
बी.काम. आनर्स
बी.काम. फाईनेन्स, बी.काम. कम्प्यूटर, बी.एड़.
एम.ए.
(हिन्दी,अंग्रेजी,अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, इतिहास एवं गृहविज्ञान)
एम–एस.सी.
(रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, गणित, वनस्पति विज्ञान एवं जन्तु विज्ञान)
एम.एड़., एम.काम.

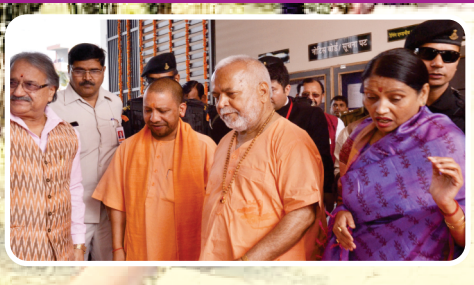

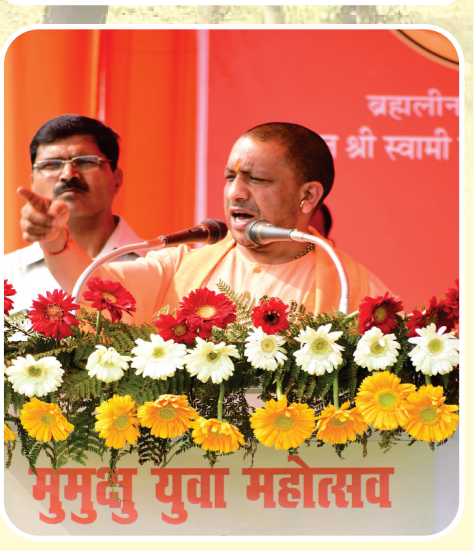

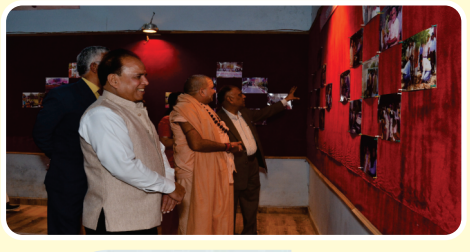

डा. अवनीश कुमार मिश्रा
सचिव

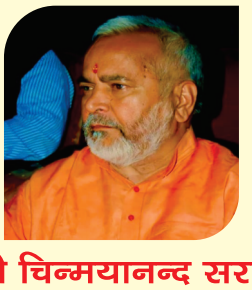

स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती
अध्यक्ष, प्रबंध समिति

प्रो. डा. आर.के. आजाद
प्राचार्य

Website-www.sscollegespn.org., E-mail: sspgspncollege@gmail.com

मुमुक्षु महोत्सव व दीक्षांत समारोह में सभी अतिथियों का स्वागत व अभिनंदन

नैक बी+ ग्रेड

स्वामी शुकदेवानन्द विधि महाविद्यालय

(सम्बद्ध महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली एवं बार काउन्सिल ऑफ इंडिया द्वारा मान्यता प्राप्त)

स्वामी शुकदेवानन्द विधि महाविद्यालय-एक दृष्टि

स्वामी शुकदेवानन्द विधि महाविद्यालय, जिसे लोकप्रिय रूप से एस.एस. कालेज के नाम से जाना जाता है, विधि के क्षेत्र में अध्ययन-अध्यापन के लिए समर्पित एक शैक्षणिक संस्थान है। महाविद्यालय की स्थापना परमपूज्य स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती जी महाराज द्वारा स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज की स्मृति में 3 मार्च 2003 को की गई थी। वर्तमान में यह राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 24 पर स्थित है। महाविद्यालय में एलएल.बी. (त्रिवर्षीय), एलएलबी (पंचवर्षीय) और एलएल.एम. (त्रिवर्षीय) पाठ्यक्रम सफलता पूर्वक संचालित होते हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, छात्रों के उत्तम परिणाम, आधुनिक शिक्षण संस्थान, सुसज्जित एवं प्रदूषण मुक्त हरा भरा परिसर और खेल आदि विभिनन क्षेत्रों में उपलब्धियां महाविद्यालय की विशेषताएं है।

कॉलेज को भारतीय विधिज्ञ परिषद (नई दिल्ली) द्वारा अनुमोदित किया गया है, यू.जी.सी. धारा 2 (एफ) और 12 (बी) के अंतर्गत स्व-वित्त पोषित कॉलेज के रूप में मान्यता प्राप्त है और स्थायी रूप से महात्मा ज्योतिबा फुले रोहिलखंड विश्वविद्यालय, बरेली से सम्बद्ध है। वर्ष 2017 में कॉलेज को नैक द्वारा बी + ग्रेड की मान्यता मिली थी। एसएस लॉ कालेज वर्ष 2003 में अपनी स्थापना के बाद से बहुत कमू समय में एक प्रमुख शैक्षणिक विधि संस्थान के रूप में उभरा है। विश्वविद्यालय स्तर पर इसकी गणना सर्वोच्च 5 महाविद्यालयों में होती है।

महाविद्यालय की उपलब्धियां

- नगर का प्रथम विधि महाविद्यालय।
- बी.सी.आई. मानको के अनुसार सीटों की अधिकतम संख्या।
- महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय का प्रथम विधि महाविद्यालय है, जिसे विधि परस्नातक (एलएल.एम.) पाठ्यक्रम की अनुमति प्राप्त हुई है।
- **प्रतिष्ठित पूर्व छात्र** - न्यायिक अधिकारियों, लोक अभियोजक, सहायक अध्यापक, बैंक अधिकारियों एवं सर्वोच्च न्यायालय तथा विभिन्न उच्च न्यायालयों में अधिवक्ता।
- **उत्कृष्ट परिणाम** - वर्ष 2011, 2013, 2016-2017 में कालेज के कई छात्रों ने स्वर्ण पदम हासिल किया।
- **उत्कृष्ट खेल सुविधाएं** - छात्र-छात्राओं के लिये महाविद्यालय में इन्डोर स्टेडियम तथा क्रीड़ागन की सुविधा उपलब्ध है।
- कालेज के द्वारा पुस्तकें और पत्रिकाएं भी प्रकाशित की गई है। महाविद्यालय द्वारा अब तक 10 से अधिक राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन किया गया है जिनमें केन्द्रीय विश्वविद्यालय एवं राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के कुलपतियों, संकायाध्यक्षों, विभागाध्यक्षों एवं विधि के प्राध्यापकों ने प्रतिभाग किया।
- समृद्ध, वातानुकूलित पुस्तकालय एवं ई-लाइब्रेरी।
- वातानुकूलित मूट कोट, सभागार की सुविधा।
- शीतवाद नियंत्रित अध्ययन कक्ष, अध्यापकों तथा गैर शैक्षणिक कर्मचारियों के लिये सुव्यवस्थित कक्ष एवं आधुनिक सुविधायें।

स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती
अध्यक्ष, प्रबंध समिति

डा. अवनीश कुमार मिश्रा
सचिव

डा. जयशंकर ओझा
प्राचार्य

हमारे पूर्वजों ने अपने शरीर को प्रयोगशाला के रूप में विकसित किया: प्रो. त्रिपाठी

एसएस कालेज में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ शुभारंभ

लोक पहल

शाहजहांपुर। स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय में वाणिज्य संकाय में भारत मे बौद्धिक संपदा अधिकार कानून और व्यवहार के उभरते हुए मुद्दे पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ उच्च शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो. जी सी त्रिपाठी ने स्वामी शुकदेवानंद के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर व पुष्पांजलि अर्पित कर किया। इस मौके पर मुख्य अतिथि डॉ त्रिपाठी ने कहा कि शक्ति का स्वरुप अब इंसान में परिवर्तित हो गया है। और वह स्वरूप बौद्धिक संपदा के एकीकरण, अहंकार रहित विद्या का ज्ञान के रूप में इस ब्रह्मांड को प्राप्त है उन्होंने कहा कि हमारे पूर्वजों ने अपने शरीर को प्रयोगशाला जिससे बौद्धिक संपदा हमारे देश में और पूरे विश्व में विकसित हुई। प्रयागराज के एसपीएम कॉलेज की प्रो डॉ मंजुला सिंह ने कहा कि जो राष्ट्र अपनी बौद्धिक संपदा का दुरुपयोग करता है वह राष्ट्र कभी भी आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक रूप से उन्नति नहीं कर सकता। डॉ रानी त्रिपाठी ने कहा दैवीय संविदा हमेशा राष्ट्र में सुख और समृद्धि का सूचक होती है । प्राचार्य डॉ आर के आजाद ने कहा कि हाल ही में भारत ने अपने समग्र अंतर्राष्ट्रीय बौद्धिक संपदा स्कोर में 38.4 प्रतिशत से 38.6 प्रतिशत तक सुधार किया है। उप–प्राचार्य व वाणिज्य विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डॉ अनुराग अग्रवाल ने कहा कि भारत बौद्धिक संपदा का सबसे ज्यादा सृजन करने वाला देश है।इस मौके पर बौद्धिक संपदा अधिकार पर प्रकाशित पुस्तक व बीबीए की शिक्षिका महिमा सिंह की श्स्पर्शश पुस्तक का विमोचन किया गया व वाणिज्य विभाग में अच्छे कार्य के लिए डॉ के के वर्मा व 13 प्रतिभावान बच्चों को सम्मानित किया गया। सेमिनार में 2 तकनीकी सत्र चलें प्रथम तकनीकी प्रथम सत्र में बरेली विश्वविद्यालय की प्रोफेसर डॉ तूलिका सक्सेना, अर्थशास्त्र विभाग की डॉ रुचि द्विवेदी, डॉ नरेंद्र कुमार , डॉ राजीव अग्रवाल, डॉ आरएन सिंह डॉ वेदप्रकाश, डॉ श्रवण कुमार सिंह जबकि द्वितीय तकनीकी सत्र में बरेली कॉलेज बरेली के वाणिज्य विभागाध्यक्ष प्रो भूपेंद्र सिंह, डॉ पंकज यादव, डॉ दयाराम प्रो मंजुला सिंह, डॉक्टर जगदीश कुमार वर्मा आदि रहे दोनों तकनीकी सत्रों में लगभग 30 से अधिक शोधपत्र पढ़े गए जिसमें सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र बीकॉम की छात्रा आद्रिका रस्तोगी ,आस्था मिश्रा, शिवांगी गुप्ता के शोध पत्रों को बेस्ट पेपर अवार्ड मिला ,प्रो डॉ अनुराग अग्रवाल के संचालन में हुए कार्यक्रम का संयोजन डॉ के के वर्मा ने किया। आभार डॉ कमलेश गौतम ने व्यक्त किया। इस अवसर डॉ प्रभात शुक्ला, डॉ सुशील शुक्ला, हर्ष पाराशरी, राजेंद्र सिंह राजपूत, डॉ देवेंद्र सिंह, डॉ गौरव सक्सेना, डॉ अजय कुमार वर्मा, डॉ सचिन खन्ना, डॉ संतोष प्रताप सिंह, ब्रजलाली अपर्णा त्रिपाठी, प्रकाश वर्मा प्रतिक्षा मिश्रा डॉ रूपक श्रीवास्तव, यशपाल कश्यप देव सिंह दिव्यांश मिश्रा प्राची मिश्रा स्नेहा सिंह आर्ची मिश्रा समेत कोई संख्या में छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

मुमुक्षु महोत्सव में तीन मार्च को बहेगी काव्य की रसधारा

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। स्वामी शुकदेवानन्द के निर्माण दिवस से स्वामी चिन्मयानन्द के जन्मदिन तक चलने वाले मुमुक्षु महोत्सव के अन्तिम दिन तीन मार्च को स्वामी चिन्मयानन्द के जन्मोत्सव पर एक अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। कवि सम्मेलन में श्रृंगार रस की ख्यातिलब कवियित्री बनारस विभा शुक्ला जहां श्रृंगार गीतों को सुनाएंगी वहीं हास्य व्यंग्य के सशक्त हस्ताक्षर कानपुर के डा. सुरेश अवस्थी अपनी रचनाओं के माध्यम से लोगों को गुदगुदाने का काम करेंगे। अमेठी की संदल अफरोज़ गीत गज़ल सुनाकर लोगों को काव्य धारा से जोड़ने का काम करेंगी। वहीं मध्य प्रदेश के उज्जैन के गीत सम्राट कैलाश तरल भी सम्मेलन की शोभ बढ़ाएंगे। कोटा के हास्य व्यंग्य प्रतिष्ठित कवि देवेन्द्र वैष्णो भी कवि सम्मेलन में काव्य पाठ करेंगे।

स्वामी हरिहरानंद के सानिध्य में सम्पन्न हुआ रूद्र महायज्ञ

शाहजहांपुर। मुमुक्षु महोत्सव के अंतर्गत श्री रुद्रमहायज्ञ के द्वितीय दिवस पे पूज्य महामंडलेश्वर स्वामी हरिहरानंद के सानिध्य में स्वामी सर्वेस्वरानंद द्वारा 15 विद्वान ब्राह्मण आचार्य जयंत पाठक, पं प्रवीन वशिष्ठ, पं विनय पाराशर, पं शिवम दुबे, पं ललित तिवारी, पं रवि पांडेय, पं गौतम मिश्रा, आचार्य, आदेश पांडेय, पं सुभाष त्रिवेदी, पं दिलीप त्रिवेदी, पं धीरज मिश्रा, पं मेहुल मिश्रा, पं लक्ष्य मिश्रा, पं विशाल मिश्रा, पं अर्वेश मिश्रा के साथ यज्ञ मंडप में आवाहित सभी देवी देवताओं का पूजन व रुद्राभिषेक किया।

स्वामी शुकदेवानंद के अभिषेक से हुआ मुमुक्षु महोत्सव का शुभारंभ

लोक पहल

शाहजहांपुर। जनपद के मुमुक्षु आश्रम स्थित मुमुक्षु शिक्षा संकुल के मुमुक्षु महोत्सव का शुभारंभ हो गया। यह महोत्सव दिनांक 3 मार्च तक निरंतर चलेगा। प्रातः 8:00 बजे अमरकंटक मध्य प्रदेश से पधारे महामंडलेश्वर स्वामी हरिहरानंद सरस्वती ने स्वामी शुकदेवानंद सरस्वती जी का अभिषेक एवं पूजन करके महोत्सव का शुभारंभ किया। इस अवसर पर गढ़ से पधारे स्वामी सर्वेश्रानंद सरस्वती, देवभूमि हरिद्वार से पधारे स्वामी अभेदानंद एवं स्वामी धर्मानंद ने भी पूजन अर्चन किया। पूजन कराने वाले ब्राह्मणों में आदेश पांडे, प्रवीण वशिष्ठ, जयंत पाठक, धीरज मिश्रा, मेहुल मिश्रा और लक्ष मिश्रा आदि सम्मिलित थे। महोत्सव के शुभारंभ के उपरांत स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर संकुल की पांचो शिक्षा संस्थाओं के प्राचार्य, शिक्षक बड़ी मात्रा में छात्र छात्राएं एवं जनपद के अनेक श्रद्धालु एवं विद्युत जन उपस्थित थे।

समाज के लिए प्रासंगिक है एनएसएस की गतिविधियां : डा. रानी त्रिपाठी

एसएस कालेज एनएसएस का सात दिवसीय शिविर का समापन

लोक पहल

शाहजहांपुर। स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के विशेष शिविर का रंगारंग समापन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। स्वयंसेवी रोशनी प्रजापति ने पिछले छः दिनों की गतिविधियों का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया। शिविर के समापन के अवसर पर रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन हुआ। जिसमे मुख्य अतिथि के रूप में आर्य महिला डिग्री कॉलेज की पूर्व प्राचार्य डॉ रानी त्रिपाठी तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में वाणिज्य संकाय अध्यक्ष डॉ अनुराग अग्रवाल, डॉ आलोक मिश्रा, डॉ बरखा सक्सेना, डॉ निधि त्रिपाठी उपस्थित रही। डॉ बरखा सक्सेना ने समस्त स्वयंसेवियो को उपहार भेंट किये। कार्यक्रमों की श्रृंखला में सर्वप्रथम सारस्वत पाण्डेय और उनके साथी संध्या शर्मा, अभिषेक सिंह, हिमांशु सिंह, अभिषेक मिश्रा, हीरा नाज, आदित्य मिश्रा, आदि ने 'शिक्षित नागरिक विकसित राष्ट्र' थीम पर एक लघु नाटिका प्रस्तुत की।

आदित्य मिश्रा ने भजन और लोकगीत प्रस्तुत किया। रोशनी प्रजापति, प्रभा पांडे, अलका सिंह, करन प्रताप सिंह, साक्षी सिंह, अभिषेक सिंह, वैभव गुप्ता आदि स्वयंसेवीयो ने विभिन्न विषयों पर अपने विचार मंच पर साझा किया। शिविर में उत्कृष्ट योगदान देने वाले सारस्वत पांडे, प्रभा पांडे, रोशनी प्रजापति, अभिषेक सिंह, आदित्य मिश्रा, हीरा नाज, संध्या शर्मा, करण प्रताप सिंह को मुख्य अतिथि ने मेडल देकर सम्मानित किया। इस मौके पर डॉ रानी त्रिपाठी ने कहा कि 'राष्ट्रीय सेवा योजना में सेवा शब्द जो जुड़ा हुआ है वह निस्वार्थ शब्द के साथ है। एनएसएस इकाइयां उस गतिविधि का आयोजन करती है जो समुदाय के लिए प्रासंगिक है। डॉ अनुराग अग्रवाल ने कहा कि 'स्वैच्छिक समुदाय सेवा के माध्यम से छात्रों के व्यक्तित्व और चरित्र के विकास के प्राथमिक उद्देश्य के साथ राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) को शुरू किया गया था। कार्यक्रम का संचालन सारस्वत पांडे ने किया। आयोजन में प्रीति गंगवार, गोपाल सिंह, मनीषा गुप्ता, ज्योति, अर्पित सिंह, अंशिका राठौर, यशी श्रीवास्तव, वंशिका वर्मा, मुस्कान शर्मा, हसमुखी, बृजेश, लक्ष्मी सिंह ,आदि स्वयंसेवीयो का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। कार्यक्रम के अंत में कार्यक्रम अधिकारी डॉ प्रमोद कुमार यादव ने सभी का आभार व्यक्त किया।

एक नजर में - मुमुक्षु शिक्षा संकुल

स्वामी शुकदेवानन्द महाविद्यालय

पूज्य स्वामी शुकदेवानन्द महाराज जी की प्रेरणा से जनपद के शैक्षणिक पिछड़ेपन को दूर करने तथा जनपद में उच्च शिक्षा की अलख जगाने के उद्देश्य से 08 मार्च 1964 को स्वामी शुकदेवानन्द कालेज की स्थापना हुई। महाविद्यालय में सत्रारम्भ 1965 में बीएस प्रथम वर्ष की कक्षाओं से हुआ। उसके बाद महाविद्यालय निरन्तर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होता रहा। स्वामी चिन्मयानन्द जी महाराज की प्रेरणा से वर्ष 1993 में एमएड, एमकाम की कक्षाएं प्रारम्भ हुई। वर्ष 2003 में महाविद्यालय परिसर में श्री शुकदेवानन्द प्रेक्षागृह, सेमिनार कक्ष, मनोविज्ञान प्रयोगशाला, वर्ष 2004 में एक इंडोर स्टेडियम का लोकार्पण क्रमशः तत्कालीन महामहिम राज्यपाल विष्णुकांत शास्त्री जी एवं तत्कालीन सांसद एवं वर्तमान में उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री माननीय योगी आदित्यनाथ जी द्वारा किया गया। वर्ष 2009–10 में स्वामी चिन्मयानन्द जी महाराज द्वारा जनपद के छात्र–छात्राओं के हितों को ध्यान में रखकर विभिन्न विषयों यथा गृहविज्ञान, चित्रकला, संगीत, इतिहास, शिक्षाशास्त्र, डीएलएड एवं वर्ष 2015–16 में सात विषयों में एमए तथा पांच विषयों में एमएससी की कक्षाएं प्रारंभ की गई। स्वामी जी का यह कदम जनपद के छात्र–छात्राओं को उपकृत्य करने वाला था क्योंकि इससे पूर्व यहां के अनेक बच्चे स्नातकोत्तर की शिक्षा प्राप्त करने के लिए दूसरे जिलों में जाने के लिए बाध्य होते थे। महाविद्यालय में वर्तमान में सात हजार से अधिक की छात्र संख्या तथा 200 से अधिक शिक्षक अध्ययन अध्यापन के कार्य में रत है। महाविद्यालय अपने व्याख्यान मालाओं, राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों, सामुदायिक सहयोग के कार्यो हेतु नित्य नए आयाम स्थापित कर रहा है।

श्री शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ

मुमुक्षु शिक्षा संकुल अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती जी महाराज की प्रेरणा से जिले के बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से पाश्चात्य वैज्ञानिक, तकनीकि ज्ञान, साहित्य कला की शिक्षा प्रदान करने हेतु 25 फरवरी 1989 को कांचीकाम कोटी पीठ के जगतगुरू शंकराचार्य जी द्वारा मुमुक्षु आश्रम परिसर में श्री शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ की आधारशिला रखी गई। वर्तमान में इस विद्यापीठ में 1500 से अधिक छात्र–छात्राएं अध्ययनरत है तथा 100 से अधिक शिक्षक–शिक्षिकाएं सेवाएं दे रहे है। विद्यापीठ अपने सुरम्य वातावरण तथा संरचनात्मक वैभव के लिए प्रसिद्ध है। यहां विज्ञान, कला, वाणिज्य विषयों सहित कम्प्युटर साइंस बायोटेक्नोलॉजी की शिक्षा भी प्रदान की जाती है। विद्यापीठ का आगामी लक्ष्य टोटल क्वालिटी मैनेजमेन्ट तथा आईएसओ 9001 की श्रेणी में स्कूल को मान्यता प्रदान कराना है। विद्यापीठ के पास दो विशाल प्रांगण है तथा व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक क्रीड़ा प्रतियोगिताओं तथा अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का निरनतर आयोजन यहां होता है। इसके वाषिक परीक्षा परिणाम सुधार मूल्यों, सद्व्यवहार, अनुशासन की विधा में वेग, स्पंदन, संगीत का सरस एवं शाश्वत संचार करते हैं। विद्यापीठ द्वारा राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त कान्वेन्ट स्कूलों के साथ एक्सचेंज प्रोग्राम शुरू किया जा रहा है।

स्वामी शुकदेवानन्द विधि महाविद्यालय

मुमुक्षु शिक्षा संकुल अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानन्द जी महाराज द्वारा जिले के युवाओं को कानून की शिक्षा देकर कानून व्यवसाय से जोड़ना इस संस्थान का लक्ष्य है। 25 फरवरी 2003 को उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल महामहिम विष्णुकांत शास्त्री द्वारा यहां विधि त्रिवर्षीय कक्षाओं के साथ इसका शुभारंभ किया गया। वर्ष 2007 में यहां विधि पंचवर्षीय कक्षाओं का प्रारंभ हुआ। महाविद्यालय का भवन अत्यधिक सुविधाओं से परिपूर्ण तथा एक भव्य मंजिला इमारत है। यहां बहुविध राष्ट्रीय स्तर की शैक्षणिक तथा गैरशैक्षणिक गतिविधियां संचालित की जाती है। वर्ष 2017 में महाविद्यालय को नेक मूल्यांकन में बी प्लस का ग्रेड प्रदान किया गया है। वर्ष 2018 से यहां एलएलएम की कक्षाएं भी प्रारंभ हो गई है। यहां 550 के तकरीबन छात्र–छात्राएं कानून की शिक्षा प्राप्त कर रहे है। जबकि अध्यापकों की संख्या 50 है। सत्र 2020–21 से महाविद्यालय में ई–प्लेटफार्म एसएसएलसी एक्ट के माध्यम से प्रवेश प्रक्रिया आनलाईन है। जबकि शिक्षण तथा संवाद की सुविधा को और अधिक प्रभावी बनाने के उद्देश्य से ई–गर्वनमेन्स तथा फैडेना पोर्टल का सफल संचालन किया जा रहा है। महाविद्यालय द्वारा समय–समय पर व्याख्यान मालाएं, न्यायालय–जेल भ्रमण, विधिक साक्षरता केन्द्र इत्यादि कार्यक्रम आयोजित किये जाते है।

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती इंटर कालेज

स्थानीय जनता के आग्रह पर वर्ष 1942–43 में स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज ने इस कालेज की नींव रखी। इसका प्रारम्भिक नाम श्री देवी सम्पद इण्टर कालेज था। भवन की इमारत अत्यंत पुरानी तथा कमजोर हो चुकी थी। मुमुक्षु शिक्षा संकुल अधिष्ठाता पूर्व केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती जी महाराज ने इसके स्थान पर नई इमारत का निर्माण कराकर कालेज का नया नाम स्वामी धर्मानन्द सरस्वती महाराज के नाम पर स्वामी धर्मानन्द इण्टर कालेज कर दिया। नई इमारत हेतु भूमि पूजन वर्ष 2016 में हुआ था तथा भवन 2 वर्षो की अवधि मे तैयार हुआ। उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री माननीय योगी आदित्यनाथ जी द्वारा 25 फरवरी 2018 को इसका लोकार्पण किया गया। जुलाई 1951 से ही यह माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के रूप में मान्यता प्राप्त है तथा क्षेत्र के छात्र–छात्राओं को विज्ञान एवं कला तथा व्यवसायिक विषयों में शिक्षा प्रदान कर रहा है। महाविद्यालय की छात्र संख्या एक हजार है तथा यहां 15 शिक्षक अध्ययन अध्यापन के कार्य में लगे हुए है। महाविद्यालय का मैदान काफी बड़ा तथा हरा–भरा है। इसमें बॉलीवाल, क्रिकेट, बैडमिंटन, हाकी, खो–खो, कबड्डी बास्केट बॉल आदि कई प्रकारों के खेलों की व्यवस्था है। विद्यालय के स्काउट तथा एनसीसी कैडेट्स राष्ट्रीय प्रादेशिक तथा स्थानीय महत्व के आयोजनों में भागीदारी करते है।

श्री दैवी सम्पद संस्कृत महाविद्यालय

8 अगस्त 1942 को जिस दिन भारत की आजादी के लिए महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारत छोड़ो आन्दोलन शुरू किया गया उसी दिन ब्रहम्लीन स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज द्वारा वैदिक शिक्षा के प्रचार व प्रसार के उद्देश्य से मुमुक्षु आश्रम परिसर में श्री दैवी सम्पद संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना की गई। इस विद्यालय के लिए जमीन भारत के गृहमंत्री गुलजारी लाल नंदा जी ने उत्तर प्रदेश सरकार के तत्कालीन मुख्यमंत्री पंडित गोविन्दबल्लभ पंत जी से कहकर दिलवायी थी। यहां आचार्य तक की शिक्षा प्रदान की जाती है। महाविद्यालय का उद्देश्य हिन्दू दर्शन, वेद पुराण की शिक्षा देकर युवाओं को राष्ट्र के सांस्कृतिक पुनरूत्थान से जोड़ना है। महाविद्यालय वाराणसी सम्पूर्णानंद संस्कृत महाविद्यालय से सम्बद्ध है। वर्तमान में यहां पर 100 से अधिक छात्र तथा 9 शिक्षक कार्यरत है।

मुमुक्षु आश्रम

सन 1941 में पूज्य स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज शाहजहांपुर में लाला अमरनाथ टंडन के यहां चौक स्थित निवास स्थान पर पधारें। उन्होंने सिविल लाइंस की विशम्भर कुटी को अपना तपस्या स्थल बनाया तत्पश्चात उन्हें आश्रम हेतु पर्याप्त भूमि शहर के ही विशन चन्द्र सेठ के परिवार से मढ़ा स्थान पर मिल गई। यहीं पर सन् 1942 में मुमुक्षु आश्रम की स्थापना हुई। वर्तमान में यह 50 एकड़ से अधिक भूमि पर विस्तृत है। आश्रम में केदारेश्वर भगवान, श्री राम दरबार, भगवान राधाकृष्ण के सुन्दर मन्दिर एवं झाकियां है। पूजा स्थल के अतिरिक्त आश्रम शिक्षा का सुप्रसिद्ध केन्द्र है। इसके अन्तर्गत स्वामी शुकदेवानन्द पीजी कालेज, श्री दैवी सम्पद संस्कृत महाविद्यालय, श्री दैवी सम्पद इण्टर कालेज, स्वामी शुकदेवानन्द लॉ कालेज व श्री शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ स्थित है। 11 फरवरी 1988 से पूर्व केन्द्रीय गृहराज्यमंत्री स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती जी महाराज आश्रम के मुख्य अधिष्ठाता के पद पर आसीन है। समय–समय पर देश विदेश की अनेक महान विभूतियां यहां आती रही है। इनमें मुख्य रूप से राष्ट्रपति डा0 राजेन्द्र प्रसाद, सर्वपल्ली राधाकृष्णन, लोकसभा के प्रथम अध्यक्ष जीवी मावलंकर, श्री गुलजारी लाल नंदा, श्री लालकृष्ण आडवाणी, श्री विष्णुकांत शास्त्री, श्री कल्याण सिंह जी, डा0 मुरलीमनोहर जोशी, सुन्दर लाल बहुगुणा इत्यादि शामिल है। आश्रम अपनी प्राकृतिक विविधता के लिए भी सुप्रसिद्ध है।

लोक पहल, राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक, मुमुक्षु आश्रम, शाहजहॉपुर, प्रधान संपादक अरूण पाराशरी

लोक पहल हिन्दी साप्ताहिक स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक डा. अवनीश कुमार मिश्रा द्वारा शाहजहॉपुर प्रिन्टर्स जज साहब वाली गली, तारीन बहादुरगंज जिला शाहजहॉपुर 242001 से मुद्रित व 160 रोशनगंज लक्ष्मी राईस मिल, शाहजहॉपुर 242001 उ0प्र से प्रकाशित। संपादक–सुयश सिन्हा मो. 9935740205 E-mail : lokpahalspn@gmail.com समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र शाहजहॉपुर होगा।